

ree Vashno Devi Yatra

uide with historical cum religious back ground, isting cultural and spiritual importance of ilgrimage and several prayers etc. etc.

●

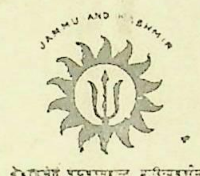
AUTHOR :

K N. Prabhakar

Publisher :

an Astrological Research Bureau (Regd.)
Laxmi Nagar, Saharanpur U. P.

जम्मु कश्मीर के राज्यपाल डॉ० कर्ण सिंह की शुभ-कामना
मूल रूप में प्रस्तुत—



मङ्गलमयी शक्तिरूपा वैष्णो देवी
जगज्जननी है वरदायिनी है। देवी की
अलौकिक छवि का वर्णन करने का श्री
केदारनाथ प्रभाकर का प्रयत्न सुन्दर लगा।
जनसाधारण के लिये यह पुस्तक अवश्य
उपयोगी सिद्ध होगी मुझे विश्वास है।
प्रयास की सफलता के लिये शुभकामनायें।

कर्ण सिंह

राज्यपाल जम्मु-कश्मीर

कर्ण महल,
श्री नगर
२७-९-१९६६

श्री नव दुर्गा

श्रों प्रथमं शैल पुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ।
तृतीयं चन्द्र घण्टेति कूठमाण्डेति चतुर्थकम् ।।
पंचमं स्कन्दमातेति षष्टं कात्यायनीति च ।
सप्तं काल रात्रीश्च महागौरीति चाष्टमम् ।।
नवमं सिद्धि दात्रिश्च नव दुर्गाः प्रकीर्तिता ।

नव दुर्गाश्रों के नाम

श्रर्थात् शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्री, महागौरी तथा सिद्धि दात्री—यह नव दुर्गाश्रों के नाम हैं ।

वीतराग पूज्यपाद

श्री १०८ स्वामी गीतानन्द जी महाराज भिक्षु जी का

* शुभाशीर्वाद *

मैंने श्री पं० केदार नाथ जी प्रभाकर के द्वारा लिखी हुई श्री वैष्णो देवी यात्रा नामक पुस्तक का संक्षिप्त रूप से अध्ययन किया। वास्तव में यह पुस्तक देवी के सम्बन्ध में बहुत ही मार्मिक व रहस्यपूर्ण है। अतः जिज्ञासु जनों को चाहिये कि इस पुस्तक का अध्ययन अवश्य करें और वैष्णो देवी की उपासना एवं यात्रा करके लौकिक तथा पारलौकिक लाभ उठायें।

गीतानन्द भिक्षु
सप्तऋषि आश्रम,
सप्त सरोवर, हरिद्वार, उ. प्र.

दिनांक ज्येष्ठ कृष्ण ३०
सं० २०२३

High Commissioner for India
in Ceylon
Colombo 3.

July 6, 1966

Dear Shri Prabhakar,

I am in receipt of your letter of 25th May, which reached here just this working.

I am glad to know that you have written a booklet on Pilgrimage to Vaishnudevi.

I hope it will prove a useful guide for pilgrims going to Vaishnudevi.

With regards.

Your Sincerely
Bhim Sen Sachar

जम्मु-कश्मीर के मुख्य मन्त्री श्री गुलाम मुहम्मद सादिक की शुभ-कामना
मूल रूप में प्रस्तुत —



CHIEF MINISTER
JAMMU & KASHMIR

سرینگر ۔ ۶۶-۶۴۳/سی ایم/۵

۳/۶ جون ۱۹۶۶ء

مکرمی پربھاکر صاحب،

تسلیم،

آپ کا خط مورخہ ۲۵ مئی ۶۶ء ملا۔

مجھے خوشی ہے کہ آپ "شری وشنو دیوی یاترا" کے نام سے ایک کتاب شائع کر رہے ہیں اور مجھے یقین ہے کہ اگر آپ کی یہ کوشش معیاری رہی تو یہ یاتریوں کیلئے بہت ہی مفید ہوگی۔
میں آپ کو اس کوشش کی کامیابی کے لئے اپنی نیک خواہشات بھیجتا ہوں

مخلص

غلام محمد صادق

جناب کیدار ناتھ پربھاکر
"شنکر نکیتن"
لکشمی نگر، جوالا پور
سہارنپور، اتر پردیش

दश महाविद्या

काली तारा महा विद्या षोडशी भुवनेश्वरी ।
भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा ।
बगला सिद्धविद्या च मातङ्गी कमलात्मिका ।
एता दश महाविद्या सिद्ध विद्या प्रकीर्तिता: ।

दश महाविद्याओं के नाम

अर्थात् काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगला, मातङ्गी तथा कमला–यह दश महाविद्याओं के नाम हैं ।

हमारे केदार जी !

आदमी तो नए हैं, उम्र भी अभी कुछ नहीं, पर दृष्टि पैनी है, सूझ बूझ अच्छी है और सबसे बड़ी बात यह कि व्यवहार में सरल हैं।

बरसों पहले की बात है, किसी मित्र ने केदार जी के सम्बन्ध में यह अप्रत्यक्ष परिचय दिया था एक ज्योतिषी के रूप में। चर्चा नगर के ज्योतिषियों पर चल रही थी, तभी यह बात आई थी और आई थी उनके द्वारा जो हर सप्ताह नहीं, तो हर मास जरूर किसी नए ज्योतिषी से मिलने के आदि हैं।

तरुण पीढ़ी के लोग अक्सर मिलने को आते रहते हैं। उस दिन भी एक तरुण आए। एक दम गौरवर्ण, पतली छरहरी देह, सौम्य सलोना मुख मण्डल और शालीन वार्तालाप। ये स्वयं केदार जी ही थे। यह पहली मुलाकात थी, पर लगा कि उनके साथ बरसों पुराना सम्बन्ध है और वे सदा ही मिलते-जुलते रहे हैं। बात यह है कि उनका संस्कार शुद्ध भारतीय सस्कार है कि बड़ों के प्रति आदर और छोटों के प्रति ममता उनमें सहज है। वे प्रभावित होते हैं दूसरों के गुणों से और प्रभावित करते हैं अपने गुणों से। कहूँ, वे गुणी हैं, वे गुण पारखी हैं, गुणों को परखकर ही नहीं रह जाते। अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से, गुरू जनों की सेवा से, जिज्ञासा से उसे ग्रहण करते हैं। इसमें उनके स्वभाव की सरलता बहुत सहायक है और उनका सद्‌व्यवहार इतना आकर्षक है कि वे बड़ों में स्वयं उन्हें अपनी उपार्जित विभूति देने की प्रवृत्ति पैदा कर देते हैं। एक कवि मित्र के शब्दों में वे उस प्याले की तरह हैं जो सुराही को सिर

झुका कर रस देने के लिए विवश कर देता है।

वयोवृद्ध सामुद्रिक शास्त्री श्री लक्ष्मी नारायण जी त्रिपाठी उस दिन केदार जी के साथ पधारे। आधी शताब्दी से भी अधिक की साधना है उनकी। अनेक ग्रन्थों के लेखक और राजा महाराजाओं द्वारा पूजित। कहाँ नरसिंह गढ़, कहां सहारनपुर? मैंने कहा—"सहारनपुर का भाग्य है कि आप पधारे।" वात्सल्य में ओत प्रोत हो बोले—"केदार जी का प्रेम खींच लाया है!"

देव प्रयाग की ज्योतिष अनुसन्धान शाला के डायरैक्टर श्री पंडित चक्रधर जोशी जी, भृगु संहिता के देश विख्यात शास्त्री श्री शिवकुमार दीक्षित और डोगरी भाषा के वर्चस्वी शोधक-प्रचारक श्री श्यामलाल शर्मा जैसे विद्वानों का आतिथ्य उन्हें प्राप्त होता रहा है। दूर रहते भी विश्व-विख्यात ज्योतिषाचार्य श्री सूर्यनारायण व्यास, ज्योतिष्मती के सम्पादक श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी जैसे विद्वानों का सम्पर्क परामर्श और सौजन्य उन्हें प्राप्त है और उनका व्यक्तित्व इस प्रकार धीर गति से समृद्ध हो रहा है। एक ज्योतिषी के रूप में भी, एक लेखक के रूप में भी। वे किसी विषय के गहरे अध्ययन, चिन्तन के बाद उस पर सम्मति स्थिर करते हैं और फिर उसे बिना किसी बनावट के एक दम सादगी से लिख देते हैं। यह सादगी ही उनके लेखों की शक्ति है, क्योंकि इसी के कारण वे पाठक के लिए ग्राह्य और सुपाच्य हो जाते हैं। वैष्णोदेवी की यात्रा, महिमा और इतिहास के वर्णन में भी उनकी कलम की यह सादगी खूब प्रस्फुटित हुई है।

ज्योतिषी कहने को उनका योग क्षेम कर्म है, पर असल बात यह है कि वह उनके लिए उनके पिता विख्यात ज्योतिषी स्वर्गीय श्री पंडित गौरीनाथ जी की धरोहर है। इसलिए ज्योतिष में उनकी बौद्धिक नहीं, आध्यात्मिक आस्था है जो उन्हें, नित नूतन सिद्धि की ओर बढ़ा रही है।

१७ मार्च १९६४ दोपहर का समय, केदार जी ने आकर एक पर्चा मेरे हाथ में दिया। उस पर एक कुण्डली बनी थी। नीचे लिखा था—"पण्डित जवाहर लाल नेहरू का जीवन १९ मई के बाद नहीं है।" पत्रों में नेहरू जी के स्वास्थ्य सुधार के समाचार छप रहे थे। इसलिए अजीब-सा लगा।

केदार जी फिर एक दिन आए और बोले—नागपुर से नेहरू जी की कुण्डली आई है। उसमें और इलाहाबाद वाली कुण्डली में जन्म समय फर्क है। अब यदि दूसरी कुण्डली ठीक है तो नेहरू जी का जीवन १९

मई की जगह २९ मई तक जा सकता है। समय की बात, उसके दूसरे दिन ही नेहरू जी ने अपनी प्रेस कान्फ्रेन्स में कहा--"मेरा जीवन अभी समाप्त नहीं हो रहा है।"

भुवनेश्वर कांग्रेस का विश्लेषण करते समय मैंने फरवरी १९६४ के 'नया जीवन' में लिखा--"नेहरू जी की चिकित्सा हो रही है और वे पहले से काफी स्वस्थ हैं, पर हमारे राष्ट्रीय जीवन का यह महत्वपूर्ण प्रश्न है कि क्या इस बीमारी के बाद नेहरू जी के तूफानी नेतृत्व का एक नया दौर आयेगा। मेरा सुचिंतित उत्तर है : नहीं। नेहरू जी अपना प्रवृत्ति काल भोग चुके, अब उनके चरण निवृत्तिपथ की ओर हैं।" फिर भी जीवन का अन्त समय आ गया—केदार जी की यह घोषणा मुझे अटपटी लगी।

मन की इसी स्थिति में मैंने २४ मई सन् ६४ को सहारनपुर के हवाई अड्डे पर नेहरू जी के दर्शन किये। वे देहरादून जा रहे थे। उन्हें उतारने चढ़ाने में दो आदमियों ने भरपूर सहारा दिया था, फिर भी उनमें जीवन की काफी ताजगी थी और वे हमेशा की तरह ही मिले थे. पर आश्चर्य कि वे २६ मई को दिल्ली लौटे और २७ मई को उनकी मृत्यु का समाचार मिला। इस समाचार में जहाँ जवाहर लाल जी का चिरसंगी चेहरा मन में उभरा, वहां केदार जी की दूर तक देखती आंखें भी आँखों में खेल गई। और भी कई अवसरों पर मैंने उनकी ज्योतिष साधना का चमत्कार देखा है। मैं आश्चर्य चकित रह गया हूँ। केदार जी भारतीय ज्योतिषियों की तरुण पीढी में अपना उत्तम स्थान रखते हैं और मेरी भविष्य वाणी है कि अगले कुछ वर्षों में वे देश प्रसिद्ध ज्योतिषियों की पंक्ति में प्रतिष्ठित होंगे। मैं ज्योतिषी नहीं हूँ कि ग्रह देख कर भविष्य कहूँ। मैं तो एक जीवन साधक हूँ और ग्रहण देख कर ही भविष्यवाणी कर रहा हूँ। उनका ग्रहण उपार्जन गहरा है। वे ज्योतिष के नये पुराने अनुसंधानों में डूबे रहते हैं। गुरुजनों की साधना का लाभ उठाते हैं, चिन्तन मनन करते हैं और इनके साथ ही अपनी शक्ति में नहीं, अपने इष्ट शिव की भक्ति में तल्लीन हैं। मुझे प्रसन्नता है कि उनके सम्बन्ध में मुझे कुछ शब्द लिखने का यह अवसर मिला।

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
विकास लि०, रेलवे रोड
दिनांक : २०-८-'६६ सहारनपुर : उ० प्र०

अपनी ओर से

नाम रूपादिकं सर्वं यस्यामेवस्य योगिनः।
ध्यायन्ति विष्णुरूपां याँ सा सर्वान् पातु वैष्णवी ॥

मुझे बचपन से ही मां वैष्णो से परम अनुराग रहा है और कई बार मां के दर्शनों का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ है। देश विभाजन के बाद प्रथम बार सन् १६५८ में अपने पूज्य पिता (स्वर्गीय पं० गौरीनाथ राज ज्योतिषी गुजरांवालिया) जी के साथ सपरिवार मां के दर्शनों को जाने का सुअवसर मिला। मां के दर्शन करने के बाद तुरन्त मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि भगवती वैष्णो के अवतार के विषय में जानकारी की जावे। मैंने बहुत लोगों से पूछताछ की, मगर कोई संतोषजनक उत्तर न मिला। इधर मैंने अपने पूज्य पिता जी से इस विषय में जानने की इच्छा प्रकट की और उन्होंने काफी कुछ समझाने के बाद मुझे बार बार भगवती के चरणों में आकर दर्शन करने का आदेश दिया और इस रहस्य को समझाया कि माता वैष्णो अपने आप तुम्हें सब कुछ बता देगी और तुम दृढ़ निश्चय से इस कार्य में लगे रहो। उनका वाक्य सत्य निकला और मां ने मुझे हर बार नई से नई जानकारी प्रदान की और आज उसी की कृपा से वह सब जानकारी इस छोटी-सी पुस्तक के रूप में मां के चरणों में अर्पित है।

मां वैष्णो के अवतार की समस्त गाथाएँ, यात्रा सम्बन्धी पूर्ण जानकारी और पथ प्रदर्शिका (गाईड) यह तीन प्रकरण मां के तीनों रूप हैं। (महाकाली, महालक्ष्मी एवं महा सरस्वती:)। अन्त में विविध उपयोगी

दिव्य स्तोत्र, प्रार्थना मन्त्र, कीर्तन ध्वनियां तथा आरती भी दी गई हैं।

प्रस्तुत पुस्तक को सम्पूर्ण करने में मुझे निम्न ग्रन्थों की सहायता लेनी पड़ी है तथा मैं इनके लेखकों एव प्रकाशकों का धन्यवाद करना अपना प्रथम कर्त्तव्य समझता हूं।

श्री वेङ्कटेश्वर स्टीम प्रेस बम्बई से प्रकाशित श्री वराह पुराण, श्री मार्कण्डेय पुराण तथा श्री देवी भगवत पुराण। गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित शक्ति अङ्क' व 'तीर्थ अङ्क'। धर्मार्थ ट्रस्ट जम्मु से प्रकाशित 'श्री वैष्णवी पीठ' तथा श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० झांसी से प्रकाशित सम्वत् २०२२ का पंचाङ्ग है।

धर्ममूर्ति सेठ रत्न लाल जी तलवाड़ गवर्नमेंट एक्साइज कन्ट्रेक्टर पुरानी मंडी सहारनपुर निवासी का मैं बड़ा आभारी हूं, जिन्होंने मुझे इस पुस्तक के मुद्रित करने में अपना आर्थिक तथा अन्य कई प्रकार का सहयोग प्रदान कर के मेरा उत्साह बढ़ाया है।

इसी प्रकार से पवित्रात्मा स्व० श्रीमती गोमती देवी जी की सुपुत्री श्रीमती सत्यवती जी तथा पुनीत आत्मा स्व० लाला मेवा राम जी के सुपुत्र दानवीर श्री फिरोजीलाल जी पुरानी मण्डी सहारनपुर निवासी का मैं बड़ा आभारी हूं। परम श्रद्धालु इस दम्पति ने मुझे पुस्तक के प्रकाशन में तन-मन-धन का सहयोग प्रदान किया है।

पुस्तक को वर्तमान रूप प्रदान करने तथा मुझे इस दिशा में प्रेरणा देने वालों में सबसे अग्रणीय, हिन्दी साहित्य जगत के प्रकाशमान नक्षत्र तथा भारत प्रसिद्ध निर्भीक पत्रकार माननीय श्री कन्हैयालाल जी मिश्र 'प्रभाकर' का मैं सदैव आभारी हूं। आपने सदैव मेरा उत्साह बढ़ाया है और मुझे सरस्वती का आराधक बनाकर वर्तमान पुस्तक लिखने के योग्य बनाया है। इसी के साथ साथ आपके सुयोग्य सुपुत्र भाई अखिलेश, सम्पादक मासिक 'नया जीवन' एवं साप्ताहिक 'विकास' तथा आपके दोहते श्री रामकृष्ण जी शर्मा मैनेजर विकास लि० सहारनपुर के सहयोग एवं प्रोत्साहन के प्रति अपना आभार प्रदर्शित करता हूं।

इसके अतिरिक्त वीतराग श्री १०८ स्वामी गीतानन्द जी महाराज भिक्षु हरिद्वार, महाराजा डा० कर्ण सिंह जी, राज्यपाल जम्मु-

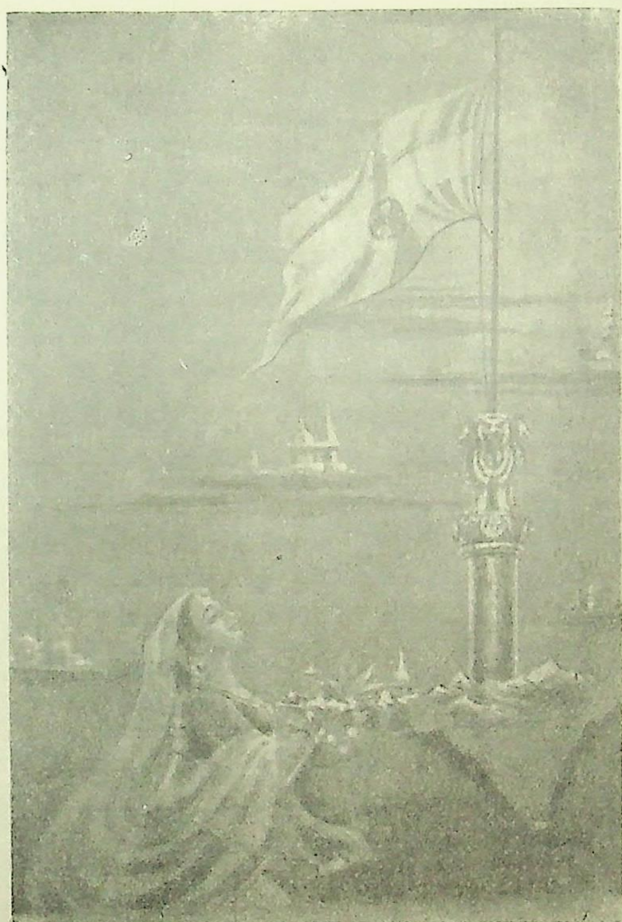
काश्मीर आरीदणय श्री गुलाम मुहम्मद सादिक जी, मुख्य मंत्री जम्मु-काश्मीर. पूज्या माता श्रीमती रामरखी जी, तपोमूर्ति पूज्य मामा गोसांई हरिचन्द जी पानीपत, ज्येष्ठ भ्राता श्री महंत भगवान दास जी हरिद्वार एवं श्री विश्वनाथ जी प्रभाकर उत्तर रेलवे सहारनपुर, प्रिय बहन कुमारी विजय लक्ष्मी प्रभाकर, श्री तीरथ राम जी माण्कटाला सहारनपुर, श्री बाबूराम जी अग्रवाल लुधियाना तथा श्री विश्वनाथ जी भाटिया लुधियाना, श्री के० सी० वर्मा जी सहारनपुर, श्री मूलचन्द शर्मा जी उत्तर रेलवे सहारनपुर, श्री बनारसी दास सेठी जी उत्तर रेलवे सहारनपुर, प्रो० सुदर्शन शर्मा जी एम. ए., श्याम लाल गुप्ता कालिज शाहदरा (दिल्ली), प्रो० जेड. एल. ज़ाला जी एम. ए, जम्मू-काश्मीर विश्वविद्यालय जम्मू, पं० श्यामलाल जी शर्मा बी. ए. बी. टी, डोगरी रिसर्च इन्सटीट्यूट जम्मु प्रिंसिपल सालिग्राम चोपड़ा जी, अध्यक्ष इण्डियन नेशनल वेलफेयर बोर्ड जम्मु. डा० एस. के. गोस्वामी जी एम. एस-सी., पी, एच-डी. पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, श्री प्रकाशचन्द जी मन्चन्दा सहारनपुर कु० वीरेन्द्र सिन्धु एम. ए, सम्पादिका 'संजीवनी' भगत निवास, सहारनपुर तथा अन्य मित्रों का, जिन्होंने इस पुस्तक के लिखने में मुझे कई प्रकार से सहयोग तथा आशीर्वाद प्रदान किये हैं, सदा आभारी रहूंगा। वास्तव में इस महान कार्य में इन सब का सहयोग अकथनीय है।

अन्त में इस पुस्तक में छपाई तथा अन्य कारणों से रह गई त्रुटियों के लिये मैं क्षमा चाहता हूं। आशा है दूसरे संस्करण में इन कमियों को दूर करने का पूरा-पूरा यत्न किया जावेगा।

मैं न तो इस विषय का पंडित ही हूं और न लेखक ही हूं, केवल भगवती वैष्णो की कृपा से जो कुछ भी मेरे से हो सका है, इस पुस्तक में लिख दिया है। यदि इसके पठन पाठन से यात्रियों एवं अयात्रियों को कुछ भी लाभ हो पाया, तो मैं अपने प्रयास को सफल समझूंगा। अस्तु

दिनांक
राष्ट्रीय २० श्रावण १८८८

विनीत–
केदार नाथ प्रभाकर



समर्पण

भारत विभूति काश्मीर की अधिष्ठात्री महामाया भगवती वैष्णोदेवी की महिमा और इतिहास का यह वर्णन काश्मीर की भारतीयता का संरक्षण करने में अपना जीवन और श्रम अर्पण करने वाले हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई वीरों को सादर समर्पित ।

केदार नाथ 'प्रभाकर'

❀ विषय सूचि ❀

इतिहास

पथ प्रदर्शिका (गाईड)

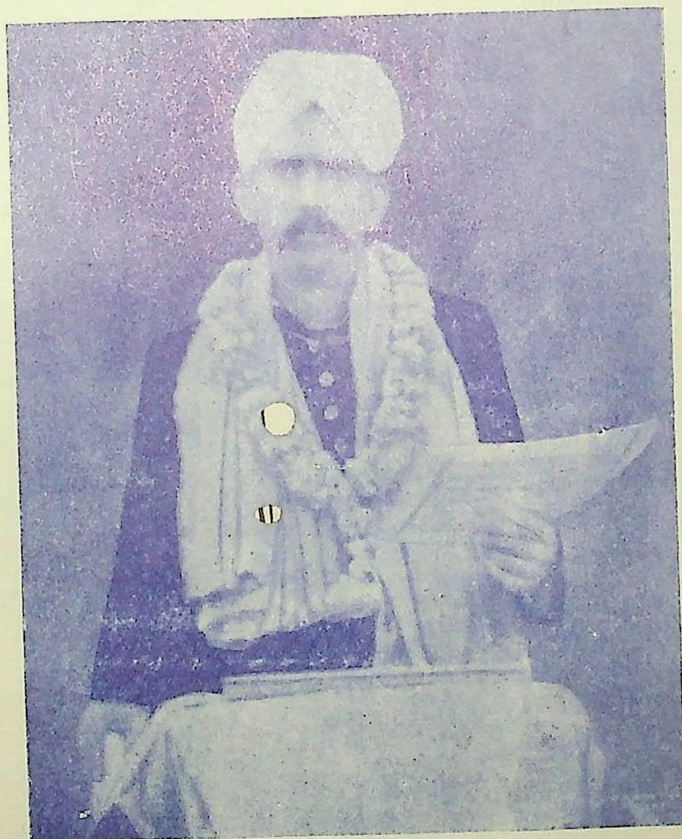
स्तोत्र एवं प्रार्थनाएं



* शुद्धि पत्र *

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
१	८	भगवत्पाद शंकर	भगवत्वादशंकर
४	१	भत	भक्त
४	२७	गय	गये
५	१९	धार	सुधार
६	२	वश्व	विश्व
६	८	निर्मलावु	निर्मलावुभौ
७	२४	ीठ	पीठ
१०	४	वैष्णौं	वैष्णो
१०	११	वष्णौं	वैष्णो
१०	१२	वैष्णौं	वैष्णो
११	११	खान से लिए	खाने के लिए
११	१९	दिवाली	दीवाली
११	५	$१\frac{1}{2}$	$१\frac{1}{2}$
१२	६	$\frac{1}{2}$	$\frac{1}{2}$
१४	११	शकर	शंकर
१५	७	ननसर्वेषु	नूनंसर्वेषु
१८	५	सहरति	संहरति
१८	२०	असख्य	असंख्य
१८	३१	धमतत्वस्य	धर्मतत्वस्य
१९	४	तग	तंग
२५	१५	सकट	सकट
२६	१७	रामाबतार	रामावतार
३१	१४	महा ाजा	महाराजा
३३	३२	विरात्री	शिवरात्री
३४	२२	नगोटा	नगरोटा
५५	१५	तत्र	तव
५५	२०	दीनातं	दीनार्तं

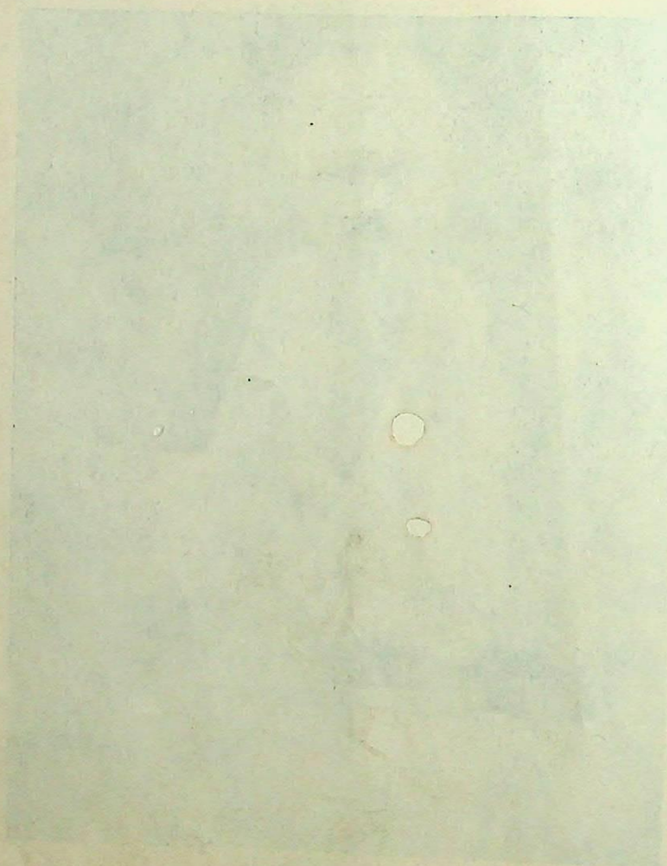
पिता स्वर्गः पिता धर्मः पिता हि परमं तपः
पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्व देवताः



मेरे भूतल के ईश्वर,
पूज्य पिता
(स्व० पं० गौरीनाथ जी राजज्योतिषी गुजरांवालिया)

जिनके तपः पूत जीवनादर्श ने मुझे ज्योतिर्विज्ञान सरीखे महान शास्त्र का आराधक बनाया तथा दैवी विश्वास का वह संस्कार दिया, जिसके कारण इस पुस्तक की रचना संभव हुई ।

—केदार



॥ ओ३म् ॥

श्री गणेशाय: नम:

श्री भवानी शङ्कराभ्याम् नम:

प्रथम प्रकरण

यात्रा

जगत गुरू भगवान शंकराचार्य एवं तीर्थ यात्रा



श्रुति स्मृति पुराणानाम् आलयं करूणालयम् ।
नमामि भगवत्पादशंकर लोक शंकरम् ॥

ईसा से लगभग चार सौ वर्ष पूर्व केरल प्रदेश के पूर्णा नदी के तटवर्ती काल नदी नामक गांव में बड़े विद्वान और धर्म निष्ट ब्राह्मण श्री शिव गुरू की धर्मपत्नी श्री सुभद्रा माता (कहीं कहीं इनका नाम [illegible] भी मिलता है) के गर्भ से

वैशाख शुक्ल पन्चमी के दिन इन्होंने जन्म ग्रहण किया था। सात वर्ष की आयु में आपने वेद, वेदांग और वेदान्त का पूर्ण अध्ययन कर लिया था और उसके कुछ वर्ष बाद आपने सन्यास धारण कर नर्मदा तट पर स्वामी गोबिन्द भगवत्पाद से दीक्षा ग्रहण की। गुरू जी ने इनका नाम भगवत्पूज्यपादाचार्य रखा। तदुपरान्त आप काशी, आ गए और वहां पर भगवान विश्वनाथ ने चान्डाल के रूप में इन्हें दर्शन दिये और इन्हें ब्रह्मसूत्र पर भाष्य लिखने एवं धर्म प्रचार करने का आदेश दिया। इसके बाद आपने कुरूक्षेत्र, बदरीकाश्रम, काश्मीर, प्रयाग, पूर्वी भारत, दक्षिण भारत एवं पश्चिम भारत के मुख्य मुख्य तीर्थ स्थानों की यात्रा की, विभिन्न मतवादियों को परास्त किया. अनेक ग्रन्थों की रचना की, मन्दिरों एवं तीथ स्थानों का जीर्णोद्धार किया और भारत के चारों ओर चार मठों की स्थापना की, ताकि धर्म प्रचार और तीर्थ यात्रा का महत्व दिन प्रति दिन बढ़ता जावे। आपने अनेकों मन्दिर बनवाये, अनेकों को सन्मार्ग में लगाया और कुमार्ग का खण्डन करके भगवान के वास्तविक रूप को प्रकट किया।

आज के समस्त तीर्थ आपके अथक परिश्रम एवं कुमार्गियों के मत्तों को समूल खण्डन के कारण ही हमें देखने को मिल रहे हैं। यदि जगद्गुरू भगवान शङ्कराचार्य जी धर्म की पुन: स्थापना न करते तो आज न तो देवालय ही होते और न तीर्थ स्थान ही होते। अतएव तीर्थ यात्रा की परम्परा को फिर से जागृत करने एव सत्य सनातन धर्म को नष्ट होने से बचाने का श्रेय केवल भगवान शङ्कराचार्य जी को है और इन्हें शत शत प्रणाम है।

श्री वैष्णों देवी की यात्रा कब से शुरू हुई ?

सृष्टि के आदि काल से ही वैष्णों माता की सुरम्य गुफा के अन्दर भगवती महाकाली, भगवती महालक्ष्मी तथा भगवती महासरस्वती विद्यमान हैं और इनकी पूजा देवों तथा मनुष्यों द्वारा निरन्तर होती चली आ रही है। भगवती सीता के अंश से उत्पन्न हुई रत्नाकर सागर की कन्या भगवती वैष्णवी भी रामावतार से लेकर अब तक इसी पवित्र गुफा में तपस्या में लीन है। समय २ पर इस स्थान पर कई चमत्कारी घटना माता वैष्णों की कृपा से घटती रहीं और आज दिन तक आये दिन कोई न कोई चमत्कार इस दिव्य स्थान पर सुनने में आ जाता है।

बिजली गिरी

देश विभाजन से पूर्व लाहौर के किसी सुप्रसिद्ध कालेज के कुछ छात्र अपने मन में अश्रद्धा और अविश्वास लिये माता वैष्णों के दर्शनों को गये और उन्होंने यात्रियों तथा बालकों (कन्याओं) से मजाक करने शुरू कर दिये। सब के समझाने पर

भी वह "माता की जय" के स्थान पर "पिता की जय" बोलते और कई प्रकार का खण्डन करते आगे बढ़ते जा रहे थे। "पिता की जय" कहना कोई बुरी बात नहीं है किन्तु महामाया वैष्णों का तिरस्कार और अपमान करके उस परम पिता परमात्मा की जय जय कार का स्वांग न तो जगतजननी वैष्णों को ही अच्छा लगा और न परम पिता परमेश्वर के मन को भाया। आद कुमारी नामक स्थान से ऊपर जाकर उन उत्पाती लड़कों ने अपना कैम्प लगाया तथा पुन: माता के नाम पर मजाक और भद्दे शब्द कहने शुरू कर दिये. यात्रियों ने समझ लिया कि कोई न कोई अशुभ घटना शीघ्र घटने वाली है अत: सब लोग प्रार्थना में लग गये। दोपहर का समय था और आकाश बिल्कुल निर्मल था, यकायक भगवती वैष्णों के क्रोध के कारण एक छोटा-सा मेघ ठीक उन लड़कों के कैम्प के ऊपर छा गया और उस में बड़े जोर से बिजली चमक कर उन पापियों के कैम्प के ऊपर गिरी और सब के सब परम पिता परमात्मा की गोद में माता वैष्णों की कृपा से सो गये। ऐसे अनेक चमत्कार अब भी देखने में आते हैं। इस स्थान पर बड़े २ नास्तिकों को आस्तिक होना पड़ा और सदा सर्वदा के लिए मां का सेवक बनना पड़ा है। यहां देरी का काम नहीं है हाथों हाथ चमत्कार मिल जाता है।

महाभारत काल से पूर्व अनेक राजा महाराजा, ऋषि, मुनि तथा साधारण लोग इस दिव्य स्थान के दर्शनों को आते रहे हैं। महाभारत काल के बाद गुरुगोरख नाथ जी भी इधर पधारे थे, ऐसा यहां के लोगों का विचार है। यह स्थान प्राय: लुप्त-सा ही हो गया था।

भक्त श्रीधर को दर्शन

आज से कई सौ वर्ष पूर्व प० श्रीधर जी परम शाक्त और मां के अनन्य पुजारी थे उनका निवास स्थान हन्साली (कटड़ा के निकट था)। उनके यहां कोई सन्तान न थी अत: वह दुखी होकर भूमका (कटड़ा से एक मील की दूरी पर स्थित देवी का प्रसिद्ध मन्दिर) में भगवती वैष्णों की निरन्तर आराधना में लग गये और नित्य प्रति छोटी २ कन्याओं का पूजन करके उनको खाने के लिये प्रसाद देते थे। उन कन्याओं में एक दिव्य रूप वाली कन्या भी नित्य आया करती थी जिसे देखकर पं० श्रीधर जी बड़े प्रभावित होते थे। कुछ दिनों के बाद जब उनकी पूजा की समाप्ति का समय आया तब उन्होंने विधिवत सब कन्याओं का पूजन किया और उन्हें प्रसाद आदि दे कर विदा किया। उन्होंने इस आलौकिक आभावाली कन्या को बिठा लिया और बड़े प्रेम से उसका नाम पूछा। उस कन्या ने उत्तर दिया कि पहले तुम भोजन करो तब मैं अपना नाम बताऊंगी। भक्त श्रीधर भी समझ गये कि यह दिव्य कन्या माता वैष्णों ही है। अत: उन्होंने प्रार्थना की कि जब तक मुझे जगदम्बा अपने हाथ से भोजन न खिलायेगी मैं भोजन न करूंगा, ऐसी मेरी

प्रतिज्ञा है । उस कन्या ने उसी क्षण भक्त श्रीधर को कहा कि तुम जो भी सात्विक भोजन खाना चाहते हो, मांगो, मैं तुम्हें दूंगी । उस दिव्य कन्या ने उस मन्दिर के अन्दर से अनेक प्रकार के वैष्णव भोजन अपने परम प्रिय सेवक को खिलाए और कहा कि मेरा नाम वैष्णवी शक्ति है तथा मैं त्रिकूट पर्वत की गुफा में निवास करती हूँ । सदियों से मार्ग खराब हो जाने से मेरे दर्शनों को कोई नहीं आता है । अतः तुम प्रतिज्ञा करो कि तुम और तुम्हारा वंश मेरी पूजा करेगा । भक्त श्रीधर ने भगवती के चरणों में लेटकर दण्डवत प्रणाम किया तथा विविधस्तुतियां गाईं और पूजन का भार सहर्ष अपने तथा अपने वंशजों पर लिया । उसी क्षण भगवती ने उसके घर चार पुत्रों के होने का वरदान दिया और स्वयं आलोप हो गई । भक्त श्रीधर ने सर्वप्रथम उस गुफा को ढून्ड कर वहां की नित्य पूजा करनी शुरू कर दी और उसके बाद उसके चारों पुत्र पूजन करते रहे तथा उन्हीं के वंशज अब भी लगातार मातेश्वरी के पुजारी हैं ।

महाराजा रणजीत देव को दर्शन

भक्त श्रीधर को दर्शन देने और ४ पुत्रों को वरदान देने की बात सब जगह फैल चुकी थी और यदा कदा लोग गुफा तक भी बड़ी मुश्किल से पहुँच जाते थे । लगभग तीन सौ वर्ष से भी पूर्व महाराजा रणजीत देव जम्मू के शासक थे । उनकी आयु छोटी अवश्य थी, किन्तु वह वीर और बुद्धिमान थे ।

उन दिनों लाहौर में मीर मिन्नू राज्यपाल थे और तात्कालिक दिल्ली नरेश के गुप्त विचारों के अनुसार जम्मू का शासन हड़प करना चाहते थे । मीर मिन्नू के कई बार कहने पर भी महाराजा लाहौर नहीं गये । एक बार मीर मिन्नू ने अपने कुछ सरदार महाराजा को लाहौर लाने के लिये जम्मू भेजे और उन्होंने महाराजा को बड़ा समझाया किन्तु वह न माने । एक दिन सब लोग आखेट खेलने घोड़ों पर सवार होकर कटड़ा से आगे त्रिकूट पर्वत के नीचे जा पहुँचे । बीहड़ जंगल में महाराजा रणजीत देव अपने साथियों से बिछुड़ गये और बड़े उदास तथा दुःखी होकर इधर उधर भटकने लगे । इतने में उन्होंने एक दिव्य कन्या को एक पहाड़ की चट्टान पर बैठे अचानक देखा और बड़े हैरान हुए । उधर उन्होंने पहले से ही इस दिव्य कन्या की कथाएं सुन रखी थीं । अतः उनके मन को कुछ धीरज हुआ और उसे प्रणाम करके रास्ता पूछने लग गये । भगवती ने उन्हें सान्त्वना दी तथा लाहौर जाने का आदेश देने के साथ २ मार्ग का दर्शन भी कराया, और अपने निवास स्थान (गुफा) के विषय में सब कुछ बताया ।

जम्मू आकर महाराजा रणजीत देव एकदम उन सरदारों के साथ लाहौर चल दिये और वहां उन्हें मीर मिन्नू ने छल से कैद कर लिया । उस दिव्य कन्या ने

उन्हें कैद में स्वप्न में दर्शन दिये एवं दिल्ली नरेश तथा मीर मिन्नू ने उन्हें अपना मित्र बना कर कैद से मुक्त कर दिया। तत्पश्चात् उन्होंने इस दिव्य स्थान की पुनः खोज की तथा कटड़ा से गुफा तक का मार्ग साफ करवा कर चलने लायक बनवाया। वह प्रतिमास दो बार नंगे पांव माता के दर्शनों को जाते थे और उन्होंने ५७ वर्ष तक निष्कण्टक राज्य किया।

उनके पश्चात् पुनः राज्य में संघर्ष होगया और देश में अराजकता फैल गयी। महाराजा रणजीत देव के भाई राजा सूरत सिंह के पौत्र राजा किशोरी सिंह की धर्मपत्नि भगवती वैष्णों की बड़ी पुजारिन थी। इनके यहां भगवती की कृपा से एक वीर और प्रतिभाशाली पुत्र-रत्न महाराजा गुलाबसिंह ने जन्म लिया। जब महाराजा गुलाबसिंह बड़े हुए तब पंजाब केसरी महाराजा रणजीत सिंह का शासन काल था और जम्मू-काशमीर का शासन प्रबन्ध उन्होंने महाराजा गुलाब सिंह को सौंपा हुआ था। महाराजा गुलाब सिंह माता वैष्णों के परम भक्त थे और कई बार दर्शनों को भी गये। इसके बाद इनके वीर और धर्मावतार सुपुत्र महाराजा रणवीर सिंह जी ने तो मां वैष्णों की सेवा में अपना जीवन ही लगा दिया था। जम्मू से कटड़ा तक मार्ग बनवाया, स्थान २ पर धर्मशालाएं और मन्दिरों का निर्माण करवाया और गुफा तक मार्ग को पक्का बनवाया। उनके बाद महाराजा प्रताप सिंह जी तथा महाराजा हरिसिंह जी भी माता वैष्णों के परम सेवक रहे तथा यात्रा करने भी कई बार गये। आधुनिक काल में भी महाराजा डा० कर्णसिंह जी भी मां के अनन्य भक्त हैं, और आपने यात्रा के मार्ग तथा गुफा के अन्दर कई सुधार किये हैं। जितनी यात्रा माता वैष्णों के दर्शनों को इनके राज्य काल में की गई है, इतनी आज तक नहीं की गई है।

अतः अनादि काल से लेकर आज दिन तक इस सिद्ध पीठ पर निरन्तर दर्शन करने लोग आते रहे हैं और आ रहे हैं तथा भविष्य में भी आते रहेंगे।

श्री वैष्णौं देवी यात्रा की विशेषता

सृष्टि तीन महाशक्तियों से संचालित है जिसे भौतिक विज्ञान वेत्ता प्रोटोन, इलैक्ट्रोन एवं न्यूटोन कहते हैं। उनके मतानुसार इन्हीं के समावेश से प्रत्येक वस्तु के परमाणु बनते हैं, जिनके सम्मिश्रण से सारा संसार बना हुआ है, परन्तु इस विद्युत शक्ति को सामयिक विज्ञान वेत्ता, जड़ और अनात्म समझते हैं, क्योंकि अभी तक उनका ध्यान आत्मा की ओर इतना आकर्षित नहीं हुआ जितना इन्द्रिय ग्राह्य वस्तुओं की ओर हुआ है।

भारत के महर्षियों ने भी लाखों वर्ष पूर्व विश्व की रचना, शक्ति द्वारा पायी थी और उन्होंने भी इस शक्ति को तीन रूपों में देखा था, रज, तम और सत।

उन्होंने इन शक्तियों को जड़ और अनात्म नहीं पाया था। इसी कारण उनको यह विश्व चैतन्य कर भासता था और इस चेतना के कारण उन्होंने इन शक्तियों का व्यक्तिकरण किया था, जिसको वह माया अथवा शक्ति के नाम से पुकारते थे।

"या देवी सर्व भूतेषु चैत्नयभिदीयते, नमस्तस्यै ३ नमो: नम:"

परमात्मा और शक्ति दोनों एक ही रूप है। इनको पृथक-पृथक नहीं किया जा सकता है। देवर्षि नारद जी को ब्रह्मा जी ने देवी भागवत में उपदेश देते हुए कहा है: –

एक: रूप: चिदात्मनौ निगुणौ निर्मलावुभौ।
या शक्ति: परमात्मासो योऽसौ सा परमामता ।।
अन्तरं नैतयो: कौऽपि सूक्ष्मं वेद च नारद।

—देवी भागवत

अर्थात् परमात्मा और शक्ति दोनों एक रूप, चिन्मय स्वरूप, निर्गुण और निर्मल हैं। जो शक्ति है वही परमात्मा है और जो परमात्मा है, वही शक्ति है, ऐसा सिद्धान्त है। इनके सूक्ष्म रहस्य युक्त भेद को कोई भी श्रद्धा रहित पुरुष नहीं जानता है। बुद्धि, श्रद्धा, लज्जा, धृति, कान्ति, शान्ति आदि विविध भावनाएं जो जीवों के अन्त:करण में निहित है वह सभी उसी महाशक्ति का ही परिचय देने वाली है। वह भिन्न-भिन्न में स्थिति होकर भी अनेक मणियों में पिरोये एक सूत की भांति अभिन्न है।

ऋषियों ने तीन शक्तियों को (रज, तम एव सत) महाकाली, महालक्ष्मी एवं महा सरस्वती के नामों से सम्बोधित किया है। देवी की रजोमयी मूर्ति की महिमा कर्म है, तमोमयी मूर्ति की महिमा मोह है और सत्वमयी मूर्ति की महिमा भोग है।

इन्हीं का नाम इच्छा, क्रिया और ज्ञान अथवा शक्ति, ऐश्वर्य और बुद्धि विवेक है। इनके सदुपयोग और दुरुपयोग से मानवता बनती-बिगड़ती रहती है। इन तीनों के योग से ही अभीष्ट सिद्धि मिल सकती है

श्री दुर्गा सप्तशती में इस तथ्य को स्पष्ट किया गया है नवार्ण मंत्र की अधिष्ठात्री भी यही तीन महान शक्तियां हैं। प्रथम चरित्र महाकाली का है जो इच्छा की प्रतीक है। महाकाली की इच्छा से ही विष्णु मधुकैटभ का संहार कर सके। द्वितीय चरित्र महालक्ष्मी का है, जो क्रिया शील है, ऐश्वर्य का प्रतीक है। देवताओं के तप तेज से उनकी उत्पत्ति हुई है और उनकी कृपा से ही मनुष्य धर्म- कर्म में निरत होता है। तृतीय चरित्र महासरस्वती का है जो ज्ञान स्वरूपा है और उसी से सब ज्ञान की प्राप्ति होती है।

आत्म स्तर पर तीनों के समन्वय से अभीष्ट कल्याण की सिद्धि प्राप्त होती है। जैसे केवल शक्ति और लक्ष्मी का योग प्रायः अधोगति 'का ही प्रतीक है, उससे दानवता का विकास होता है, शक्ति और लक्ष्मी के सहारे राक्षस पाप का उपभोग करके पतित होते हैं और देवता पुण्य का उपभोग करके अधोगति को प्राप्त होते हैं।

शक्ति और सरस्वती के योग से और लक्ष्मी तथा सरस्वती के योग से मानवता का विकास होता है शक्ति और सरस्वती आत्मा के माध्यम से निवृत्ति और लक्ष्मी तथा सरस्वती से प्रवृत्ति मिलती है, इन तीनों महाशक्तियों का समभाव से उपभोग होने से प्राणी विदेह जनक के समान जीवन मुक्त होता है और देश में स्वर्ण युग का प्रादुर्भाव होता है।

भगवती वैष्णों देवी के प्राकृतिक सुरम्य गुफा के अन्दर भी तीन महाशक्तियों के ही पिन्डी रूप में दर्शन होते हैं। इसी कारण भारत का सबसे अनूठा शक्ति पीठ वैष्णों देवी ही है, जहां पर तीनों महाशक्तियों से प्रेरणा मिलती है शक्ति ऐश्वर्य और ज्ञान का प्रसाद मिलता है, अनेक स्थानों में शक्ति मन्दिर बड़े बड़े चमत्कारी एवं प्रसिद्ध हैं किन्तु तीन महाशक्तियों द्वारा सुशोभित सिद्ध पीठ संसार में केवल यही है जहां कि भगवती वैष्णों ने तपस्या के लिये स्थान ढूंढा है। इसी गुफा के अन्दर वैष्णवी भगवती अतीत काल से तपस्या कर रही है। इस प्रकार से भगवती वैष्णों ही त्रिकुटेश्वरी एवं त्रिकला नाम से निरन्तर पूजित होती चली आ रही हैं। आश्विन और चैत्र के नवरात्रों के समस्त भारत में इसी की पूजा होती है और इसी की आराधना से समस्त जीवों को सुख सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

तीर्थ यात्रा का सांस्कृतिक महत्व

सातवीं तथा आठवीं शताब्दी में भारत में कोई भी चक्रवर्ती सम्राट न था। समस्त भारत छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित हो गया था। उस समय के शासक भी कलह और मनमुटाव में ही अपनी शक्ति को नष्ट करने लगे थे। ऐसे संकट काल में राष्ट्रीयता तथा एकता लुप्त हो गई थी, उस समय कामकोटि पीठ की ३६ वें शंकराचार्य जिनका नाम अभिनव शंकर था और जिन्होंने भगवान आदि शंकराचार्य की भांति भारत का भ्रमण किया, उन्होंने भारतीय एकता को स्थापित करने के लिये अनेक धार्मिक स्थानों की फिर से खोज की उनका जीर्णोद्धार किया, लोगों को उनका महत्व बताया, एव उन धार्मिक स्थानों की यात्रा को महत्वशाली बनाया।

उन्होंने यात्रा में तीन मुख्य बातें रक्खीं

१—यात्री सादगी के साथ किसी भी प्रकार का श्रृंगार (फैशन, न करते हुए यात्रा करें और इस यात्रा में उपवास भी करें।

२ – रात्रि को शयन पृथ्वी पर करें।

३—किसी के यहां भी आतिथ्य स्वीकार न करें।

इन तीन नियमों का विशेष महत्व भी है। प्रथम नियम के अनुसार यात्री बिलकुल सादगी के साथ यात्रा करे और साथ-साथ उपवास भी करेंगे, तब यात्रियों के मन में काम वासना उत्पन्न ही न होगी तथा विचार शुद्ध रहेंगे और हर समय भगवान की याद रहेगी। दूसरे नियम के फलस्वरूप वह जिस स्थान पर रात्रि या दिन में विश्राम करना चाहेंगे, उनको कोई कठिनाई न होगी, क्योंकि न तो उन्हें सोने के वास्ते बढ़िया चारपाई ही चाहिये, तथा न स्वादिष्ट भोजन ही चाहिए। तीसरे नियम के पालन से यात्री अपनी यात्रा के मध्य किसी के यहां अतिथि बनकर रहेंगे तो वह किसी भी प्रकार कष्ट नहीं देवेंगे और इस प्रकार अतिथि (मेहमान) और आतिथेय (मेजबान) दोनों को ही सुख मिलेगा। इस भावना को धारण कर दक्षिण भारत का यात्री, उत्तरी भारत तक, पूर्वी भारत का यात्री पश्चिम भारत तक अपना घर समझ कर सुखपूर्वक यात्रा कर सके और इन धार्मिक स्थानों की यात्रा के कारण भारत की राजनैतिक पराधीनता में भी सांस्कृतिक एकता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त किसी अन्य यात्री से लड़ें व झगड़ें नहीं, दूसरों की सहायता करें, मन में दया भाव रक्खें, सत्य बोलें और सबसे प्रेम करें।

आज के युग में भी, जब हम स्वाधीन हैं और स्वच्छन्द रूप से भारत में चारों ओर यात्रा कर सकते हैं, तब भी ऊपर वाले नियमों को ध्यान में रखकर ही यात्रा करनी विशेष सुखदायक सिद्ध होगी। अन्य स्थानों को छोड़कर भगवती वैष्णों की यात्रा में तो आज भी इन्हीं नियमों का पालन करते हैं और कितना सच्चा आनन्द मिलता है। यही कारण है कि प्रत्येक वर्ष अधिक से अधिक संख्या में यात्री मां वैष्णों के दर्शनों को सागर में जल की भांति खिचे चले आते हैं।

तीर्थ यात्रा का आध्यात्मिक महत्व

"नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः" (शुक्ल यजुर्वेद १६/४२)

भारत एक धर्म प्रधान देश है। यहां की पृथ्वी का कण-कण महत्वपूर्ण है। यों तो संसार के देशों में अनेक तीर्थ स्थान हैं, पर भारतवर्ष में तीर्थ स्थानों की भरमार है। अतीत काल से हमारे ऋषि मुनियों ने अपनी तपस्या, त्याग और परोपकार से अपनी जन्म-भूमि तथा निवास स्थान को धार्मिक तीर्थ नाम दिलवाया है। 'तीर्थ' शब्द का तात्पर्य है पवित्र स्थान और भारत की भूमि अपने महापुरुषों के महान कृत्यों के कारण अपने को कृतकृत्य कर चुकी है।

हमारे धर्म का अर्थ बहुत व्यापक है और तीर्थ का भी। भारतवर्ष ने सदा ही आध्यात्मिक विकास तथा आत्मिक उन्नति को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया

है। भारतीय संस्कृति अन्तर्मुखी रही है। वाह्य संसार से परिचय की आवश्यकता ही नहीं समझी। यही कारण है कि प्राचीन काल से ही हमारा साहित्य हमें अपने भीतर की ही सैर करने की शिक्षा देता चला आया है। (यत ब्रह्मान्डे तत् पिन्डे·) अर्थात जो कुछ बाहर है वह सब हमारे शरीर के अन्दर है। हमारे यहां हर प्रकार की धार्मिक कथा अन्त में हमारे ही शरीर पर घटाई जाती है कि सब कुछ इसी शरीर के अन्दर है। ठीक इसी प्रकार तीर्थ यात्रा का सम्बन्ध भी हमारी अन्तर आत्मा से जोड़ा गया है। तीर्थ यात्रा का वास्तविक प्रयोजन है आत्मा का उद्धार करना। इस लोक और परलोक के भोगो की प्राप्ति के लिए तो और भी बहुत से साधन हैं। अतएव मनुष्य को भोगों की प्राप्ति के लिए तीर्थ यात्रा न करके आत्मा के कल्याण के लिए ही तीर्थ यात्रा करनी चाहिये। जो मनुष्य आत्म कल्याण के उद्देश्य से श्रद्धा भक्ति पूर्वक नियम पालन करते हुए तीर्थ यात्रा करता है। उसे तीर्थ से महान् लाभ होता है। 'तीर्थं पर किं स्वमनो विशुद्धम्'' —शकराचार्य

जिस प्रकार सूर्य के ताप से रहित प्रातः काल या साय काल के उत्तम समय में तथा उत्तम पुरुषों के संग और उनके साथ वार्तालाप के समय स्वाभाविक ही मनुष्य की चित्तवृत्तियां शांत और सात्विक रहती हैं। उसी प्रकार हरिद्वार, ऋषीकेश बद्रीनाथ, केदार नाथ, वृन्दावन, द्वारिका जी, रामेश्वरम्, चित्रकूट, ज्वाला मुखी, वैंष्णों देवी तथा अमर नाथ आदि-२ तीर्थों में जाकर वहां एकांत वन में श्रद्धा भक्ति पूर्वक निवास करने से वहां के पवित्र परमाणुओं का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। उनका साधारणतया तो वहां रहने वाले सभी लोगों पर प्रभाव पड़ता है। किन्तु जिनका हृदय शुद्ध होता है उन श्रद्धालु मनुष्यों पर तो विशेष रूप से उनका प्रभाव पड़ता है जैसे सूर्य का प्रभाव समान भाव से होते हुए भी दर्पण पर उसका विशेष रूप से प्रभाव पड़ता हैं। उसी प्रकार ईश्वर की शक्ति का प्रभाव सब जगह सामान भाव से रहते हुए भी जिनके मन में श्रद्धा भक्ति और अन्तः करण की पवित्रता होती है, उन पर उनका विशेष प्रभाव पड़ता है।

अतएव मनुष्य को श्रद्धा भक्ति पूर्वक विधि और नियमों का पालन करते हुए ही तीर्थ यात्रा करनी चाहिए। तीर्थों में जाकर श्रद्धा प्रेम पूर्वक दर्शन करते हुऐ उस स्थान के देवी अथवा देवता की महिमा आदि का स्मरण करके दिव्य स्तोत्रों द्वारा आत्मोद्धार के लिए उनकी स्तुति प्रार्थना पूजा और नमस्कार करना चाहिए। भोग और ऐश्वर्य को अनित्य समझते हुए विवेक वैराग्य के द्वारा इन्द्रियों को विषयों से हटाते हुए भगवान और उनकी शक्ति महामाया का कीर्तन और स्वाध्याय करना चाहिये। इसके अतिरिक्त मौन रहने का प्रयप्न करना चाहिये तथा अहंकार का दमन करना चाहिये। तभी आत्मा का उद्धार होगा और हमें तीर्थ यात्रा का वास्तविक आनन्द मिलेगा।

तीरथ व्रत और दान कर मन में धरे गुमान।
नानक निष्फल जात है ज्यों कुंजर अस्नान।।

—ग्रन्थ साहिब।

श्री वैष्णौं माता के पुण्य तीर्थ स्थान में आज भी प्राचीन काल की भांति स्वयमेंव मन को शान्ति और भगवती के चरणों का अटूट ध्यान आने लग जाता है। कटड़ा से ज्यों ही हम यात्रा शुरू करते हैं उसी क्षण मन में आत्मिक शान्ति मिलनी शुरू हो जाती है। सारा संसार भूल जाता है और केवल माता वैष्णौं का ही ध्यान बनता चला जाता है। और इस घोर कलियुग में भी सब कामनायें तथा कामवासनाएं वहां जाकर एक दम नष्ट हो जाती हैं और जय जयकार के अतिरिक्त कुछ भी सुनाई नहीं देता। यह है वास्तविक एवं आध्यात्मिक सच्चा आनन्द जो एक पवित्र तीर्थ में मिलना चाहिए जो वैष्णौं देवी में अनायास मिल जाता है।

श्री वैष्णौं देवी यात्रा में धारण करने योग्य द्वादश वर्षीय नियम

मां वैष्णौं के दरबार में जाकर हमें निम्न लिखित १२ दोषों को छोड़ने की प्रतिज्ञा करनी चाहिये तब जाकर हमारे जीवन में, हमारे देश में तथा जाति में कुछ सुधार हो पावेगा, नहीं तो यात्रा के दिनों में केवल कुछ काल के वास्ते ही आनन्द का भास होगा और उसके अतिरिक्त फिर वही सांसारिक प्रभाव हमें अपने अन्धकार में लपेट लेगा और हम गंगाजल में मछली की भांति तथा मन्दिरों में पक्षियों की भांति कोरे के कोरे रहेंगे। अतः हर यात्री का कर्त्तव्य है कि प्रत्येक यात्रा के समय वह इन बारह त्याज्य दोषों में से किसी एक को छोड़ने का संकल्प मां के सामने खड़ा होकर करे और इस प्रकार बारह वर्षों में प्रत्येक वर्ष एक-२ दोष को छोड़ते हुए वह समस्त दोषों से छुटकारा पाकर अपने देश धर्म और आत्मा का सच्चा उद्धार कर पावेगा। उसके अन्दर महामाया की अनन्त कृपा रहेगी। यात्रा सफल होगी, जीवन सफल होगा और दान सफल होगा और कर्म सफल होगा केवल ऊंचे-२ जयकारे बोलने से, लेट-२ कर दन्डवत् प्रणाम करने से और ऊपरी श्रद्धा दिखाने से आपकी अन्तर आत्मा को कोई लाभ न पहुँचेगा। कुछ न कुछ बुरे व्यसन छोड़ने से महामाया के नित्य गुणानुवाद की प्रतिज्ञा करने से सब के साथ समता और नम्रता का व्यवहार करने से ही यात्रा का सच्चा फल प्राप्त होगा।

१. बुरी आदतें छोड़ो। २. झूठा मान छोड़ो। ३. कटु वचन छोड़ो।
४. अकर्मण्यता छोड़ो। ५. झूठ बोलना छोड़ो। ६. रिश्वत खोरी छोड़ो।
७. बेईमानी छोड़ो। ८. स्वार्थपरता छोड़ो। ९. ईर्ष्या डाह छोड़ो।
१०. शराब कबाब छोड़ो। ११. बीड़ी तम्बाकू छोड़ो। १२. भांग गांजा छोड़ो।

श्री वैष्णों देवी यात्रा की आवश्यक सामग्री

रबड़ के जूते, धूप का चश्मा, कन्धे पर लटकाने वाला थैला, टार्च, कैमरा शुद्ध धुले कपड़े, (कुर्ता, धोती या पायजामा गुफ़ा में जाने के वास्ते) भेंट के लिए नारियल ध्वजा, सुपारी फूल पान, धूप केसर, इत्र आदि (यह सब वस्तुयें कटड़े में भी मिल जाती हैं)। छत्र (सोने का या चांदी का) मौसम के अनुसार गर्म कपड़े, सितम्बर-अक्तूबर में तो मामूली गर्म कपड़े, नवम्बर-दिसम्बर में कुछ अधिक गर्म कपड़े। (स्वैटर, कोट, मफलर, मोटे कम्बल,) गिलास या लोटा जल के लिए, छड़ी बांस की (कटड़े से ही मिलेगी), कुछ खटाई (अनार दाना वगैरा), बस में खाने या चूसने के लिये पिपरमेन्ट की या लैमन जुस की गोलियां, कन्जकों को बांटने के लिए वस्त्र, खाने की सामग्री या कुछ रेजगारी, कुछ सूखे फल, बादाम, किशमिश, मिश्री आदि (चढ़ाई चढ़ते समय खाने से लिए, दूरबीन (दूर का दृश्य देखने के लिये) नहाने का सामान–एक खाली शीशी (बाण गंगा से जल लाने के लिए), नोट बुक, पेन्सिल अमृत धारा, चूर्ण (पाचन के वास्ते), कुछ सिर दर्द के लिए बटियां चाकू और मजबूत एक या दो ताले।

यात्रा का समय

अब तो प्रायः हर समय माता वैष्णों के दर्शनों को जाया जा सकता है। किन्तु आश्विन के नवरात्रों से (सितम्बर-अक्तूबर से) दिसम्बर के मध्य या अन्त तक यात्री जाते ही रहते हैं, परन्तु सबसे सुहाना समय अक्तूबर एवं नवम्बर ही हैं। दिवाली के उपरान्त भैया दूज, (टिका) से विशेष भीड़ हो जाती है। अतः सर्विस वाले यात्रियों को २ या ३ दिन की फालतू छुट्टियां लेकर ही उस समय जाना चाहिए। कई बार समय के अभाव के कारण निराश होकर वापिस आना पड़ता है।

यात्रा का मार्ग

माता वैष्णों का पवित्र दरबार जहां माता की सुन्दर प्राकृतिक गुफा बनी हुई है जिसे हम सिद्धाश्रम भी कह सकते हैं, जम्मू काश्मीर राज्य के जिला उधमपुर में जम्मू नगर से उत्तर की ओर त्रिकूट पर्वत के नीचे स्थित्त है। सर्व प्रथम पठान कोट से जम्मू १०८ कि० मी० बस द्वारा आना पड़ता है। तदुपरान्त जम्मू से कटड़ा नामक स्थान तक (जम्मू से ५० कि० मी०) बस से अथवा पैदल चलना पड़ता है। कटड़ा से लगभग १० मील की पैदल पहाड़ी यात्रा के बाद माता वैष्णों के पवित्र स्थान तक पहुँचा जाता है। उधमपुर से पैदल मार्ग भी वैष्णों दरबार तक जाता है।

यात्रा में मुख्य स्थानों की परस्पर दूरियां

१ – पठान कोट से जम्मू	१०८	किलो मीटर	६७ मील
२ - जम्मू से कटड़ा	५०	,,	३१ मील
३ कटड़ा से वैष्णों दरबार	१६	,,	१० मील
४ – कटड़ा से बाण गंगा	२.४	,,	१½ मील
५—बाण गंगा से चरण पादुका	० ८	,,	½ मील
६ चरण पादुका से आदकुमारी	३ २	,,	२ मील
७—आदकुमारी से सांझी छत	३.२	,,	२ मील
८ – सांझी छत से भैरव मन्दिर	३.२	,,	२ मील
९ – भैरव मन्दिर से वैष्णों दरबार	३.२	,,	२ मील

नोट:—यह दूरियां लगभग हैं ।

यात्रा में मुख्य स्थलों की समुद्र तल से ऊंचाई

१ – जम्मू	३०४.८०	मीटर	१०००	फिट
२—नगरोटा	३६६.७४२	,,	११६५	,,
३ – कटड़ा	८८९.४०६	,,	२९१८	,,
४ – चरणपादुका	१०२९.६१४	,,	३३७८	,,
५ – आदकुमारी	१४४५.८७१	,,	४७४४	,,
६ हाथीमत्था	१८८९ ७६०	,,	६२००	,,
७—सांझी छत	२१९९.१३२	,,	७२१५	,,
८ – भैरव मन्दिर	२००६.१९३	,,	६५८२	,,
९ – वैष्णों दरबार	१६१५ ४४०	,,	५३००	,,

कटड़ा से श्री वैष्णों दरबार तक यात्रा कैसे करनी चाहिए

१ – स्त्रियों को जरूरत से ज्यादा शृङ्गार (मेक-अप) नहीं करना चाहिए ।

२ – चमड़े के जूते पहन कर नहीं जाना चाहिए ।

३—पवित्रता का ध्यान रखना चाहिये और काम-वासना रखनी, ताश खेलना, गन्दे नावल पढ़ने, गाली देनी, मजाक उड़ाना, बेईमानी करनी, मांस-शराब का प्रयोग करना, कन्धे पर ट्रांजिस्टर लटका कर फिल्मी गाने सुनने तथा लड़ना-झगड़ना आदि आदि महापाप है । इससे पुण्य नष्ट होता है ।

द्वितीय प्रकरण

इतिहास

भगवती वैष्णवी देवीं की उत्पत्ति–श्री मार्कण्डये पुराणोक्त

पहली कथा

भगवान वेद व्यास द्वारा रचित (देवी भागवत) तथा माकण्डये पुराणान्तर्गत श्री दुर्गा सप्तशती नामक विभाग में महामाया अथवा महाशक्ति की उत्पत्ति की कथायें लिखी है। वास्तव में वह महाशक्ति ही अनेक नामों से विख्यात है। उसी से तीन महा शक्तियां, दस महाविद्या, नव दुर्गा, षौडश माता, तथा नव कोटि शक्तियों ने जन्म लिया है। भिन्न भिन्न अवसरों पर भिन्न २ नाम होने से कुछ भ्रम अवश्य पड़ जाता है, किन्तु है सब एक हो महा शक्ति के नाम।

प्राचीन काल में महिष नामक एक अति बलवान असुर हुआ है, वह अपनी शक्ति से इन्द्र. सूर्य, चन्द्र, वरुण, अग्नि, वायु तथा अन्य देवों को युद्ध में पराजित कर स्वयं इन्द्र पद पर आसीन हो गया और उसने समस्त देवों को स्वर्ग से निकाल दिया अपने स्वर्ग सुख, भोग ऐश्वर्य से वचित हो दुखी देवगण साधारण मनुष्यों की भांति मृत्यु लोक में भटकने लये। अन्त में व्याकुल होकर वह लोग ब्रह्मा जी के साथ भगवान विष्णु और शिव जी के निकट गये और उनके शरणागत होकर उन्होंने अपनी दुखःद कथा कह सुनाई। इस प्रकार देवताओं का दुखद वृतान्त सुन कर भगवान शिव और विष्णु को अत्यन्त क्रोध आया। उसी क्षण ब्रह्मा, विष्णु, शंकर और अन्य देवताओं के शरीरों से एक तेज प्रकट होकर पर्वताकार एकत्रित हो गया। सर्वदेव शरीरोंत्पन्न उस तेज से दिशाएं जाज्वल्यामान हो गईं, त्रिलोकी भर गई। मानो कोटि सूर्यों का प्रकाश इक्ट्ठा हो गया! देखते ही देखते उस तेज से एक दिव्य नारी उत्पन्न हुई। यह श्रेष्ठ नारी ऐसी विलक्षण थी कि उसे देखकर सब के सब आश्चर्य युक्त हो गए।

अतुलं तत्र ततेजाः सर्व देव शरीरजम्।
एकस्थं तदभून्नारी व्याप्त लोक त्रयं त्विषा॥

—मार्कण्डेय पुराण

वही भगवती महालक्ष्मी हुई। उनमें सत रज, और तम तीनों गुण वर्तमान हैं। सम्पूर्ण देवताओं के तेज से प्रकटित वह अठारह भुजाओं से शोभा पा रही थी, उसके तीन वर्ण थे। त्रिगुणात्मक शक्ति, त्रिकला, त्रिलोकेश्वरी शक्ति के नामों से

उसे पुकारा है। भगवान शंकर के तेज से उस देवी के मुख कमल की रचना हुई। श्वेत वर्ण से सुशोभित वह मुख मण्डल अत्यन्त विशाल एवं मनोहर आकृति वाला हुआ। भगवान विष्णु के तेज से उस महाशक्ति की अठारह भुजा उत्पन्न हुईं और भगवान ब्रह्मा के तेज से चरणों की उत्पत्ति हुई। यमराज से भगवती के सुन्दर बाल, अग्नि के तेज से तीनों नेत्र. संध्या के तेज से भौहें, वायु से दोनों कान कुबेर से नासिका, प्रजापति से दांत. अरुण से नीचे का होठ और स्वामी कार्तिक के तेज से ऊपर का होठ, वसुओं से अंगुलियां, चन्द्रमा से दोनों स्तन, इन्द्र से मध्य भाग, कटिप्रदेश वरुण से जगाये और पिन्डलियां तथा पृथ्वी के तेज से नितम्ब भाग प्रकट हुआ था।

तदुपरान्त समस्त देवो ने उस दिव्य नारी को अपने अपने अस्त्र शस्त्रों से व विभूषणों से विभूषित किया। शकर ने त्रिशुल, विष्णु ने चक्र, वरुण ने शंख, वायु ने धनुष एवं बाण, अग्नि ने शतघनी नामक अस्त्र, इन्द्र ने वज्र, यम ने दण्ड. ब्रह्मा ने कमण्डल, त्वष्ठा ने गदा, तथा अन्य समस्त देवों ने अपने-अपने शस्त्र देकर उस महाशक्ति को सुशोभित किया। समुद्र ने कभी भी न फटने तथा पुराना न होने वाला लाल वस्त्र तथा चूड़ामणि प्रदान की तथा किसी ने कुण्डल और किसी ने हार तथा किसी ने नूपुर भेंट किये। पर्वत राज हिमालय ने उस दिव्य शक्ति के वाहन के वास्ते एक सुन्दर सिंह भेंट किया।

दूसरे शब्दों में सब देवों ने मिलकर अपनी बिखरी शक्ति को केन्द्रित किया, संगठित किया। अपनी पृथकता को भूलकर देवताओं ने एक रूपता या एकता को अपनाया। अपने विभिन्न नाम रूपों को भूलकर अपने ऐक्य में अपने आपको लीन कर दिया। किन्तु फूट के कारण पराजित होने के बाद ठोकरें खाने के उपरान्त।

सब देवों ने मिलकर उस महाशक्ति की स्तुति वन्दना की और दुष्ट महिषासुर को वध करने के लिए प्रार्थना की। इस पर उस दिव्य शक्ति के तुमुल निनाद से आकाश फटने लगा। समुद्र कांपने लगे। समस्त लोक क्षुब्ध होने लगे पृथ्वी डोलने लगी, पर्वत फटने लगे और देव शत्रुओं के दिल दहलने लगे। महिषासुर ने हड़बड़ाते हुए उधर देखा और बोला यह क्या है? देवी के त्रासोत्पादक शब्द का अनुसरण करता हुआ इधर उधर झांकने लगा तो सामने अपनी आभा से त्रिलोकी को प्रकाशित करने वाली धनुष का टकार करती हुई देवी को देखा, जिस के पाद तल से स्पर्श धरती झुक गयी थी जिसका किरीट मेघों को चीर कर भासित हो रहा था और जिसकी सहस्त्रों भुजाओं से दिशाएं आच्छन्न थीं। महिषासुर की कई करोड़ सेना के साथ-साथ भगवती ने उसके चौदह सेनापतियों, चिक्षुर, चामर उदग्र, कराल, बाष्कल, ताम्र; अन्धक, असिलोम, उग्रास्य, उग्रवीर्य, महाहनु

विडालस्य, महासुर, दुर्वर और दुमख आदि को नष्ट किया, अन्त में सिंह मानव और गज के आकार धारण करने वाले महिषासुर को अपने पाश से बान्धा और उसके कण्ठ पर चरण रख छाती में त्रिशूल झोंक दिया और खड्ग से उसका सिर काट दिया। दैत्यों के इस प्रकार से नाश होने पर देवों में हर्ष की लहर दौड़ गयी और उन्होंने विविध प्रकार की स्तुतियां करनी आरम्भ कर दी. भगवती ने भी प्रसन्न होकर उन्हें सान्त्वना देते हुए कहा: –

नूनसर्वेषु देवेषु नाना नाम धरा ह्यहम् ।
भवामि शक्ति रुपेण करोमि च पराक्रमम् ।।
गौरी ब्राह्मी तथा रौद्री वाराही वैष्णवी शिवा ।
वारुणी चाथ कौवेरी नारसिंही च वासवी ।।
जले शीतं तथा वह्नावोष्ण्यं ज्योतिर्दिवाकरे ।
निशानाथे हिमा कामं प्रभवामि यथा तथा ।।

- देवी भागवत

मैं सम्पूर्ण देवताओं में विभिन्न नामों से विख्यात हूँ। मैं शक्ति रूप धारण करके पराक्रम करती हूँ, गौरी ब्राह्मी, रौद्री, वाराही, वैष्णवी, शिवा, वारुणी, नारसिंही. वासवी. सब मेरे ही रूप हैं। जल में शीतलता, अग्नि में उष्णता, सूर्य में ज्योति एवं चन्द्रमा में शीलता का विस्तार करने की योग्यता जिस प्रकार बनी रहे, वैसी अवस्था करके मैं ही स्वेच्छानुसार उनके भीतर प्रविष्ट होती हूँ।

इस प्रकार देवों को अपने-अपने अनेक रूपों को समझाती हुई वह दिव्य शक्ति उनको अभय दान देती हुई मणिपुर या मणिपर्वत में चली गयी। भगवती ने देवों को समय-समय पर उनके कष्टों को मिटाने के वास्ते पुन: प्रकट होने का यह रहस्य समझाया।

साधूनां रक्षणं कार्यं हन्तव्यायेऽप्यसाधव: ।
वेद सरक्षणं कार्यमवतारैरनेकश: ।।
युगे युगे तानेवाहमवतारान् बिभर्मि च ।।

— देवी भागवत

साधु पुरुषों की रक्षा करना, वेदों को सुरक्षित करना, और जो दुष्ट हैं उन्हें मारना यह मेरे कार्य हैं, जो अनेक अवतार लेकर मेरे द्वारा किये जाते हैं। प्रत्येक युग में मैं ही उन उन अवतारों को धारण करती हूँ। बहुत काल बीत जाने पर जब शुम्भ और निशुम्भ नामक दो उत्पाती दैत्यों ने इन्द्रादि समस्त देवताओं से उनके अधिकार छीन लिये, और वह असहाय होकर मारे मारे फिरने लगे, तब उन्हें पूर्व काल में महाशक्ति के दिये गये वरदान की याद आई और वह सब मिलकर मां की प्रार्थना करने जुट गये।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणता स्मताम् ।
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥
कल्याण्यै प्रणतां वृद्धयै सिद्धयै कूर्मो नमो नमः ।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै ।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥
अति सौम्यातिरौद्रायै नमस्तस्यै नमो नमः ।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥

अर्थात् हे महादेवी तुम्हारे शिवा, प्रकृति, भद्रा, रौद्रा, नित्या, गौरी. धात्री प्रकाश रूपा, चन्द्र रूपा, परमानन्द रूपा, कल्याणी, वृद्धि रूपा, सिद्धि रूपा, नैर्ऋती, लक्ष्मी रूपा, शर्वाणी दुर्गा, दुर्गपारा, सारा, सर्व कारिणी, ख्याती, कृष्णा धूम्र रूपा अत्यन्त सौम्य रूपा, अत्यन्त रौद्र रूपा, प्रतिष्ठा रूपा तथा कृति रूपा आदि अनन्त नामों तथा स्वरूपों को हम लोग बार-बार प्रणाम करते हैं । पूर्व काल में हम ने दुखी होकर जिस महा शक्ति की स्तुति की थी और जिसने उस समय हमारे सब कष्ट दूर किये थे, हम सब उसी भगवती की आराधना करते हैं और सम्पूर्ण आपतियों को नष्ट करने के लिये उन्हें प्रकट होने के लिये प्रार्थना करते हैं । कहते हैं उसी क्षण भगवती पार्वती वहां पर स्नान करने आ गयी और देवताओं की स्तुति से प्रसन्न होकर उनके शरीर से भगवती 'शिवा ने जन्म लिया तदुपरान्त पार्वती मां के शरीर से अम्बिका पैदा हुई जिनका नाम कौशिकी भी है और वही महासरस्वती कहलाती हैं । इस प्रकार से कौशिकी के उत्पन्न होने से भगवती पार्वती का रंग काला पड़ गया और उनका नाम कालिका प्रसिद्ध हो गया । भगवती महासरस्वती की आठ भुजाएं थी और दिव्य अस्त्र-शास्त्रों से सुशोभित थीं । इसी माया ने उत्पाती शुम्भ-निशुम्भ, चण्ड-मुण्ड तथा रक्त बीज आदि का संहार किया और देवताओं को पुनः उनका स्थान दिलवाया । इस घोर युद्ध में ब्रह्माणी, माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी, वाराही, नारसिंही तथा अन्य शक्तियां भिन्न २ देवताओं के शरीर से उत्पन्न होकर भगवती कौशिकी की सहायता के लिये निज २ वाहनों पर चढ़ कर आईं और राक्षसों के सहार में जुट गई । अन्त में देवेन्द्र इन्द्र तथा समस्त देवताओं ने मिलकर भगवती की स्तुति की ।

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या विश्वस्य बीजं परमासि माया ।
सम्मोहितं देवी समस्तमेतत्त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति हेतुः ॥

तथा

शंख चक्र गदाशार्ङ्ग गृहीत परमायुधे ।
प्रसीद वैष्णवी रूपे नारायणी नमोऽस्तुते ॥

अर्थात् हे देवी ! तुम अनन्त वीर्या वैष्णवी शक्ति हो । तुम संसार की कारण स्वरूपा परमा माया हो, हे देवी तुमने समस्त संसार को मोहित कर रखा हैं, हे देवी ! पृथ्वी पर आपही के प्रसन्न होने पर मोक्ष मिलती है। हे शंख. चक्र, गदा, पद्म रूप महा अस्त्र धारिणी ! हे वैष्णवी रूपे ! आप प्रसन्न होओ, हे नारायणी ! आपको नमस्कार है ।

इस प्रकार से देवताओं द्वारा स्तुति सुनकर महा शक्ति ने इन्हें अभय दान दिया तथा भविष्य में रक्त दंतिका, शताक्षी तथा शाकुम्भरी आदि रूपों में अवतारित होकर दुष्टों और कुमार्गियों को विध्वश करने के लिये पुनः आने का वचन देकर आलोप हो गई ।

इत्थयदायदा बाधा दानवोत्था भविष्यति ।
तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरि संक्षयम् ।।

(दूसरी कथा)

श्री वराह पुराणोक्त

सृष्टि के आदि काल में अन्धक नामक राक्षस ने अपने अत्याचारों से पृथ्वी-वासियों को दुःखी कर दिया था । धरती माता उस असुर के बोझ से डगमगा गई और भगवान वराह की शरण में उपस्थित होकर अन्धक के संहार के लिये प्रार्थना करने लगी । भगवान वराह उसी क्षण पृथ्वी के साथ ब्रह्मा एवं अन्य देवों को संग लेकर भगवान महादेव जी की शरण में जा पहुँचे और आसुरी बृति के प्रभाव को नष्ट करने के लिये प्रार्थना करने लगे । इसी मध्य ब्रह्मा जी एवं महादेव जी के ध्यान मात्र से वहां पर नारायण भगवान भी प्रकट हो गये । इन तीनों देवों ने एक दूसरे को देखा और इनके शरीरों से एक तेज निकल कर इनके मध्य खड़ा हो गया । इस तेज से एक तेज युक्त दिव्य कन्या प्रकट हुई जिसकी आभा से दिशायें जगमगा उठीं । उस कन्या के तीन वर्ण थे काला, सफेद और पीला जो कि इन तीन देवों के तेज से उत्पन्न हुआ था ।

"त्रिवर्णा च कुमारी सा कृष्णा शुक्ला च पीतिका"

तीनों देवों के पूछने पर उस दिव्य कन्या ने अपने उत्पन्न होने का कारण बताया । इस पर उस देवी का नाम त्रिकला रखा गया, क्योंकि वह तीन देवों की कलाओं से उत्पन्न हुई थी ।

नाम्नासि त्रिकला देवी पाहिं विश्वं च सर्वदा ।

तदुपरान्त तीनों देवों की प्रार्थना करने पर उस महाशक्ति के भिन्न-भिन्न तीन रूप हो गये ।

सितां रक्तां तथा कृष्णां त्रिमूर्तित्व जगाम सा ।
या सा ब्राह्मी शुभा मूर्तिस्तया सृजति वै प्रजा ।।

या सा रक्तेन वर्णेन सुरूपा तनुमध्यमा ।
शङ्ख चक्रधरा देवी वैष्णवी सा कला स्मृता ।।
सा पाति सकलं विश्वं विष्णुमायेति कीर्त्यते ।
या सा कृष्णेन वर्णेन रौद्रामूर्त्तिस्त्रिशूलिनी ।।
दंष्ट्रा करालिनी देवी सा सहरति वै जगत् ।

अर्थात् ब्रह्मा जी के अंश से उत्पन्न श्वेत रूप वाली देवी सृष्टि का सृजन करती है, लाल वर्ण वाली देवी जो विष्णु भगवान के अंश से प्रकट हुई थी. वह सृष्टि का पालन करती है। भगवान रूद्र के अंश से पैदा होने वाली काले रंग वर्ण की शक्ति सृष्टि का संहार करती है। इस प्रकार से ब्राह्मी, वैष्णवी और रौद्री देवियों का प्रादुर्भाव हुआ। इसके बाद तीनों देवियां ध्वला पर्वत, मन्दराचल एवं नील पर्वत पर तपस्या करने चली गई।

कालान्तर में महर्षि सुपार्श्व के पुत्र महर्षि सिन्धु द्वीप के शाप से माहिष्मती से जन्में महिषासुर नाम के दुष्ट राक्षस ने तीनों लोकों का राज्य छीन लिया एवं सब देवता दरबदर भटकने लगे। उस समय देवताओं ने सृष्टी की पालक अर्थात् रक्षक वैष्णवी शक्ति के स्थान पर जाकर महिषासुर का संहार करने के लिये मिलकर प्रार्थना की। उधर देवर्षि नारद ने महिषासुर को भगवनी वैष्णवी के सुन्दर रूप और सौन्दर्य का वर्णन करके उसके मन को चलायमान कर दिया। दुष्ट महिषासुर स्वयं ही विवाह की इच्छा से भगवती वैष्णवी को अपने वश में करने के लिये मन्दराचल की ओर बढ़ आया। भगवती पहले से ही इसी ताक में थी अत: भगवती ने उसे उसकी असंख्य सेना के साथ समाप्त कर दिया और तीनों लोकों में पुन: देवी सम्पदा को स्थापित किया तथा देवों को उनका राज्य वापिस दिलवाया। इस प्रकार से महिषासुर के वध होने पर देवता लोग भगवती वैष्णवी की स्तुतियां करने लग गये।

नमो देवि महाभागे गम्भीरे भीम दर्शने ।
ज्यस्थे स्थिति सिद्धान्ते त्रिनेत्रे विश्वतोमुखी ।।

इस प्रकार से स्तुतियां सुनकर भगवती वैष्णवी ने देवों को सान्त्वना प्रदान करते हुए विदा किया तथा पुन: रामावतार के समय रत्नाकर सागर के यहां सीता माता के अंश से कन्या रूप में अवतरित होकर दुष्ट भैरव का वध करने तथा सुख शांति का संचार करने का वरदान दिया। साथ में आजन्म कुमारी रहकर त्रिकूट पर्वत में तपस्या करने का रहस्य भी समझा दिया।

मर्यादां धमतत्त्वस्य रक्षितुं स स्वयं प्रभु ।
यदा दशरथाद विष्णु: साकेतेऽवतरिष्यति ।।
तदावतीर्य सीतांशाद रत्नाकर महोदधौ ।।।

इस तरह से भगवती वैष्णवी की उत्पत्ति की द्वितीय कथा से यह पता चलता है कि भगवती भिन्न २ अवसरों पर संसार की रक्षा के लिये अनेक रूपों में प्रकट होकर धर्म की रक्षा करती रही है।

(तृतीय कथा)

भगवती वैष्णों का रत्नाकर सागर के यहां जन्म और भैरों का वध

त्रेता युग के अन्त में जब रावण, खरदूषण एवं ताड़का आदि राक्षसों ने पृथ्वी वासियों तथा देवताओं को भी अपने अत्याचारों से तंग कर दिया था तब मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम ने अवध पुरी में अवतार लिया था। उस समय समस्त देश में अराष्ट्रीयता एवं अराजकता का बोल बाला था। सर्वत्र अत्याचार एवं आसुरी वृति से सात्विक जन पीड़ित हो रहे थे। भारत की इस दशा को देखकर दैवी शक्तियों ने, जिनमें मुख्य रूप से महा काली, महा लक्ष्मी, महा सरस्वती, वेद-माता गायत्री एवं साविश्री आदि आदि ने एक अलौकिक शक्ति को जन्म देकर भारत का पुनोंद्धार करने के लिए विचार किया। उसी समय उनके सम्मिलित तेज से वहां पर एक दिव्य रूप बालिका प्रकट होकर सामने खड़ी हो गई। उन महा शक्तियों ने उस कन्या को दक्षिण भारत में रत्नाकर सागर के यहां जन्म लेकर संसार के दुःखों को दूर करने के लिए आदेश दिया। उस कन्या को यह रहस्य भी समझाया कि तुम भगवान विष्णु के अवतार भगवान राम की शक्ति सीता के अंश से उत्पन्न होगी। कुछ दिनों के बाद उस शक्ति ने रत्नाकर सागर के यहां जन्म लिया और उसका नाम वैष्णवी रक्खा गया। अल्प आयु में ही उस दिव्य कन्या ने अपनी अलौकिक शक्ति से ऋषियों, मुनियों, मनुष्यों और देवताओं को भी अपनी ओर आकर्षित कर लिया। रत्नाकर सागर के यहां उस कन्या के दर्शनों के लिए भीड़ का तांता लग गया। उस दिव्य कन्या ने कुछ दिनों बाद अपने पिता से आज्ञा लेकर समुद्र तट पर एक एकान्त कुटियां में भगवान राम के ध्यान में समाधि लगा कर रहना शुरू कर दिया।

उधर रामवतार का कार्य शुरू हो चुका था और रावण सीता माता का अपहरण करके लंका में जा चुका था। भगवान राम और लक्ष्मण अपनी वानर सेना सहित रावण का संहार करने जा रहे थे। मार्ग में उन्होंने एकान्त स्थल में उन्हीं के ध्यान में लीन एक दिव्य कन्या को देखा और उसकी कुटिया में पधारे। उस कन्या ने भगवान का बड़ा आदर सत्कार किया और सुन्दर आसन पर बिठाया। भगवान राम के पूछने पर उस कन्या ने अपना तथा अपने पिता का नाम बताया और अपनी घोर तपस्या का कारण भी बताया कि मैं आपकी दासी बन कर आप के साथ रहना चाहती हूँ। भगवान राम ने उसे अपनी विवशता समझाते हुए कई प्रकार के उपदेश देकर अन्त में कहा कि मैं एक बार रावण वध के बाद तुम्हारी कुटिया पर भेस बदल कर आऊंगा। यदि तुमने मुझे पहिचान लिया तो मैं तुम्हें पत्नि के रूप में ग्रहण कर लूंगा। ऐसा कहकर भगवान वहां से चले गये।

रावण का संहार करके अयोध्या वापिस आने पर भगवान राम को एक रात स्वप्न में उस तपस्विनी कन्या का ध्यान आ गया और वह प्रातः लक्ष्मण के साथ उसकी कुटिया पर बूढ़े साधु के भेस में जा पहूँचे। वैष्णवी देवी ने भगवान को न पहचाना और बड़ा पश्चाताप करने लगी। भगवान ने उसे आश्वासन दिया कि कलकी अवतार के समय कलियुग में तुम मेरी शक्ति बनोगी, अतः तब तक तुम्हें उत्तर भारत में मणिक पर्वत के तीन शिखरों वाले पहाड़ के बाईं तरफ, जहां पर तीन महा शक्तियों की एक सुरम्य गुफा है और जिसके अन्दर से ठण्डा जल सदा प्रवाहित होता रहता है, उस में जाकर तपस्या में लीन हो जाओ। वहां पर तुम अमर हो जाओगी। नलनील, हनुमान, जामवन्त आदि तुम्हारे प्रहरी होंगे और भक्त-जन तुम्हारे दर्शनों को आवेंगे और समस्त भारत में तुम्हारी महिमा फैलती चली जावेगी। इसके साथ साथ आसुरी वृति वाले दुष्ट राजा भैरों का संहार करके देवी सम्पदा का प्रसार करोगी और उत्तरी भारत में सुख शांति की स्थापना हो जावेगी। जो भगवान सूर्य नारायण ने तुम्हें कमण्डलु दिया है, उससे सब तरह के वैष्णव भोजन और कन्द-मूल फल आदि मिलते रहेंगे। भगवान राम यह वरदान देकर वहां से लौट आये और कन्या वैष्णवी भी उत्तर भारत की ओर मणिक पर्वत के निकट आ गई।

उस समय सतलुज से लेकर झेलम नदी तक भैरों बलि का साम्राज्य था। उसके अत्याचारों और आसुरी भाव के विचारों से लोगों में उसका आन्तक छाया हुआ था। वहां के इस प्रकार के भयभीत वातावरण को देखकर भगवती वैष्णों सात्विक लोगों को एकत्र कर भक्ति रूप से एक आन्दोलन शुरू कर दिया और अपने चमत्कारों से समस्त देशवासियों को अपने प्रभाव में ले लिया। इसी मध्य भगवती ने वहां पर समष्टी भंडारा देकर सब को अपने दिव्य कमण्डलु से वैष्णव भोजन देकर तृप्त किया तथा अपनाचमत्कार दिखाया। इस भण्डारे में राजा भैरों बलि भी छिप कर आया हुआ था और वह भगवती के दिव्य रूप को देखकर मोहित हो गया और भगवती का अपहरण करने की योजना बनाने लगा।

जब भगवती ने नगरोटा कंढोली में इस प्रकार से संगठन कर लिया तब अपना डेरा माई देवां के स्थान में पहुँचा दिया और भक्त लोगों तथा देवताओं की सहायता से कटड़ा में भी संगठन करना शुरू कर दिया।

राजा भैरों के यहां सैनिक शासन था जिसे आजकल डिक्टेटर शिप कहते हैं। भैरों ने अपने दूतों के हाथ भगवती वैष्णों को अपने साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट की किन्तु भगवती ने उसे ठुकरा दिया और अपना डेरा देवां माई से भूमका (भूमा) ले आई। भूमका में भैरों की एक सैनिक टुकड़ी के साथ युद्ध भी हुआ और भैरों की सेना मारी गई एवं सेना के सब [illegible] भगवती के हाथ लगे। रियासी

ग्रौर सलाल नाम के क्षेत्र भैंरों राज्य से मुक्त करवा लिये गये ग्रौर पुनः भैरों बलि के सैनिकों से युद्ध करना पड़ा। ग्रब भगवती ग्रपना शिवर चरण पादुका के स्थान पर ले गयी ग्रौर वहां से ग्रागे चलकर ग्राद कुमारी स्थान पर जा डेरा लगाया। भगवती एक गुफा में छिप कर मोर्चा बनाकर सब कुछ देख रही थी जिसे ग्रब गर्भ गुफा कहते हैं। ग्राद कुमारी में भगवती ने ग्रपनी शक्ति से एक सुन्दर तालाब भी जल से ग्रपनी सेना के लिए भर दिया जो ग्रब भी विद्यमान है। यहां पर डट कर लड़ाई हुई ग्रौर भैरों के दो सेनापति तथा ग्रसंख्य सैनिक भी मारे गये। इस पराजय से भैरों बौखला उठा ग्रौर उसने ग्राद कुमारी नामक स्थान को तीनों ग्रोर से घेर लिया ग्रौर ग्रस्त्र शस्त्र चलने शुरु हो गये। भगवती ने चुपके से ग्रपना निर्जी शिवर गुफा पर स्थानान्तर कर दिया, ग्रौर भैरों की सेना को ग्राद–कुमारी, सांभीछत तथा भैंरा टाप पर भारी पराजय मिली। ग्रब चारों तरफ वैष्णवी सम्पदा का राज्य फैलता जा रहा था ग्रौर भगवती ने किष्टवाड़, राम नगर तथा भद्रवाह में सर्थला पिंघला तथा राजेश्वरी देवियों को वहां के शासन के लिए भेज दिया। निसहाय भैंरों ने फिर सेना इकठ्ठी की ग्रौर ग्रब केवल सतलुज का प्रांत उसके ग्राधीन था। भैरों बढ़ते २ गुफा तक ग्रा गया ग्रौर उसी क्षण भगवती ने पवित्र गुफा में प्रवेश कर लिया। भैरों ने यह समझकर कि गुफा ग्रागे से बन्द है, बिना सोचे समझे उसमें घुसने का प्रयत्न किया। भगवती महाकाली ने उसी समय चक्र से उसका सिर काट दिया जो उसी चक्र द्वारा दो मिल दूर जागिराया ग्रौर धड़ वहीं पड़ा रहा भगवती वैष्णवी ने भैरों के सिर के पास जाकर उससे पूछा कि तुम क्या चाहते हो। भैरों ने ग्रपने किये हुए पर भारी पश्चाताप किया ग्रौर भगवती से क्षमा याचना की।

जगदम्ब ! हर पापानि कामिनो मे दुरात्मना।
क्षमस्व चापराधान मे सत्मार्ग मां समादिश ॥

हे जगज्जनी ! मुझ पापी, दुराचारी के पापों को हरो। मेरे ग्रपराधों को क्षमा करो ग्रौर मुझे सन्मार्ग का उपदेश प्रदान करो।

भगवती ने ग्राद्र हृदय से कहा, भैरों ग्रब तुम शुद्ध ग्रन्त करण वाले हो गये हो। बेशक तुम्हारी भावना नीच ग्रौर मलीन थी ग्रौर तुम्हारी बुद्धि ग्रासुरी थी किन्तु ग्रब तुम मेरी कृपा से सद्गति को प्राप्त होगे। मेरी पूजा के साथ तुम्हारी पूजा भी होगी। जो मेरे दर्शन करके तुम्हारे दर्शन करेगा उसके सब मनोरथ सिद्ध होंगे। इतना कहकर भगवती की कृपा से भैरों का सिर तो वहीं पत्थर हो गया ग्रौर धड़ गुफा के द्वार पर ही पत्थर बन गया।

तब से भगवती वैष्णों इसी पवित्र गुफा में भगवान राम के ध्यान में समाधिष्ट होकर विराजमान है ग्रौर गुफा के ग्रन्दर स्थित तीन पिंडियों में मध्य वाली पिंडी जो कि महा लक्ष्मी का प्रतीक है ग्रौर जिस से भगवान विष्णु का जन्म हुग्रा था उसी को माता वैष्णों के नाम का संकेत देकर दर्शन करवाये जाते हैं।

(चतुर्थ कथा)

दंत कथाओं के आधार पर

(यह दंत कथा भगवती वैष्णों के विषय में प्राचीन काल से प्रचलित है, इसका किसी पुराण में कोई उल्लेख नही है)।

गुरू गौरक्ष नाथ जी की सम्प्रदाय में से उनके महान शिष्य भैरव नाथ तथा उनके साथियों ने अपने अत्याचारों से ससार का नाक में दम कर रखा था और धर्म के नाम को मिटाने के लिये एड़ी से चोटी का जोर लगा रहे थे। सात्विक कर्मों, जैसे पूजन, पाठ आदि को विध्वंश किया जाता था, मद्यमांस भक्षण का प्रचार बढ़ रहा था, सब लोग भैरव पंथ में सम्मिलित होते जा रहे थे। स्त्रियां भी अपने पति व्रत धर्म से गिरती जा रही थीं, तब धरती भी दुष्टों के अत्याचारों से कांप उठी थी और उसी समय आसुरी सम्पदा को मिटाकर देवी सम्पदा को फिर से स्थापित करने के लिए मां दुर्गा ने भी श्री वैष्णों देवी का अवतार धारण किया और संसार का उद्धार किया। उन दिनों उत्तरी भारत में राजा चन्द्र देव का राज्य था और राजधानी थी जम्मू। उस समय राजा चन्द्रदेव ने स्थान २ पर सदाव्रत लगा रखे थे और धर्म का प्रचार होता था। उनकी रानी धर्मावती भी बहुत पतिव्रता थो, किन्तु राजा के यहां सन्तान न थी। उस समय के प्रसिद्ध ब्रह्मलीन महात्मा हंसदेव जी, जो हरिद्वार में गंगा जी के तट पर रहा करते थे, राजा चन्द्रदेव के गंगा जी आने पर देव योग से राजा से मिले और उन्होंने सन्तान प्राप्ति के लिये चण्डी पाठ करने की आज्ञा दी। महात्मा जी त्रिकालज्ञ थे, उनको भगवती वैष्णों एवं त्रिकूट पर्वत की पवित्र गुफा के रहस्य का ज्ञान था, अतः उन्होंने राजा चन्द्र देव को भी उस महान शक्ति की महिमा समझाई। जम्मू वापिस आने पर राजा ने विधिवत चण्डी पाठ एवं यज्ञ करवाया और भगवती की कृपा से उनके यहां एक कन्या ने जन्म लिया। सउ कन्या का नाम चन्द्र भागा रक्खा। कुछ समय पश्चात एक पुत्र रत्न भी उत्पन्न हुआ जिसका नाम चन्द्र रक्खा। उस समय देश कालानुसार १२ वर्ष की अवस्था में उस कन्या का विवाह महेशपुर के राजा शान्ताकार से कर दिया और चिनाब नदी के आस-पास के कई ग्राम दहेज में दे दिये और वहां पर धर्म और नीति के अनुसार राज्य होने लगा।

राजा चन्द्र देव पर कृपा

महात्मा हंसदेव जी की वाणी में इतना प्रभाव देखकर राजा चन्द्र देव उनके शिष्य हो गये। उन्होंने बड़े आग्रहपूर्वक स्वामी जी को अपने पुत्र की शादी पर जम्मू बुलवाया। चन्द्र भागा और राजा शान्ताकार भी वहां पर उपस्थित थे। स्वामी जी

ने अपने योग बल से राजा चन्द्र देव को यह कह दिया कि तुम्हारी पुत्री दो दिन में विधवा हो जायेगी। यह सुनकर तो सब लोग शोकातुर हो गये और शोकपूर्ण वातावरण सारे नगर में फैल गया। राजा चन्द्र देव तथा रानी धर्मावती की अनेक प्रार्थनायें करने पर स्वामी जी ने उनके जमाई (दामाद) के न मरने का उपाय उनको बतलाया। यदि उनकी पुत्री चन्द्र भागा भगवती वैष्णों की आराधना प्रारम्भ कर देवे तो उसके पति के प्राण बच सकते हैं। यह सुनकर चन्द्र भागा ने उसी क्षण भगवती का पूजन एवं आराधना प्रारम्भ कर दी। महात्मा हंसदेव जी उस समय पुनः वैष्णों का साक्षात्कार एव चमत्कार उस क्षेत्र में करवाना चाहते थे, क्योंकि उस महान शक्ति के रहस्य का उस समय वहां पर किसी को भी ज्ञान न था।

दूसरे दिन राजकुमार शान्ताकार बाग में सैर करने को गये, तब अकस्मात एक वृक्ष टूट कर उनके सिर पर लगने से उनकी मृत्यु हो गई यह शोक समाचार सारे राज्य में फैल गया बहुत रोने पीटने के बाद चन्द्र भागा ने प्रतीज्ञा करली कि वैष्णों माता यदि मेरे पति को जीवित न करेगी तो मैं भी उसके चरणों में प्राण त्यांग दूंगी। ऐसी प्रतिज्ञा कर अपने पति के शव को औषधियों में सुरक्षित रखकर स्वयं भगवती की आराधना में लग गई।

कई दिनों की घोर तपस्या और त्याग के प्रभाव से इन्द्र का सिंहासन भी डोल उठा। तब देवताओं ने मिलकर भगवती से प्रार्थना की कि चन्द्र भागा की इच्छा पूर्ण कीजिए। तब भगवती जगदम्बा ने सिंह पर सवार होकर चन्द्र भागा को दर्शन दिये और कहा कि मैं तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न हूँ जो वरदान मांगना हो मांगो। चन्द्र भागा ने सिंह वाहिनी देवी के सुन्दर स्वरूप को बार-बार प्रणाम किया और प्रार्थना की कि जब तक मेरे पतिदेव जीवित नहीं होते तब तक मुझे वरदान मांगने का कोई अधिकार नहीं है। भगवती ने अमृत छिड़क कर उसके पति शान्ताकार को जीवित कर दिया। राजकुमारी दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगी कि आपका दिया सब कुछ हैं, महात्मा हंसदेव जी के सदुपदेश से आपके दर्शन हुए हैं। मैं धन्य हूँ। मुझे सब कुछ मिल गय। है अब मुझे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है केवल यही इच्छा है कि आप सदा हमारे अङ्ग संग रहें, दुष्टों का नाश करें और विश्व का कल्याण करें। तथास्तु यह कह कर महामाया भगवती वष्णों देवी चिनाव नदी के तट पर स्थान बनाकर रहने लगी।

भक्त जन दूर-दूर से आकर वैष्णों माता के दर्शन कर मनोवांछित फल को प्राप्त करने लगे। रोगियों के रोग दूर हो गए। बांझों को सन्तान मिली, निर्धनों को धन मिला और इस प्रकार सारे देश में हवन और यज्ञ होने लगे और पृथ्वी पुनः स्वर्ग तुल्य हो गयी। भगवती वैष्णों त्रिकूट पर्वत के नीचे गुफा में पहले से ही विराजमान थी, केवल अधर्म को मिटाने एवं धर्म के प्रचार के वास्ते महात्मा हंसदेव की प्रेरणा से उस क्षेत्र में भ्रमण करती रही है।

भैरवनाथ का आगमन

गुरू गौक्षनाथ की सम्प्रदा में कुमार्ग पर चलने वाला भैरवनाथ अपने ३६० चेलों को साथ लेकर गौरख टीला (जिला झेहलम) से चलकर मंत्रीपुर (जम्मू राज्य) में आया और वहां पर सर्वत्र माता वैष्णों के चमत्कार और महिमा सुनकर भगवती के स्थान पर आ पहुँचा। भगवती ने उसे आदर सत्कार से बिठाया और मद्यमान्स को छोड़कर सदाचारी बनने तथा धर्म मयार्दा की फिर से स्थापना करने के लिये उपदेश दिया। किन्तु भैरवनाथ तो परीक्षा लेने आया था और उसने देवी के मोहनी रूप को देखकर यह वचन कहे "सुना है कि आप सब की इच्छा पूर्ण करती हैं मेरी भी इच्छा पूर्ण करो"। यह कह कर पाप भाव से माता के सुन्दर वस्त्र को हाथ से छूआ, किन्तु उसी समय माता वैष्णों वहां से अन्तर्धान हो गयी और जम्मू नगर में जाकर प्रकट हो गई।

कौल कन्धौली

जम्मू नगर से पांच कोस की दूरी पर नगरोटा नाम का ग्राम है और वहां की कन्याएं गेन्द खेल रही थीं। भगवती दुर्गा भी उनके साथ बालिका रूप धारण कर गेन्द खेलने लगी। उन कन्याओं को माता ने बड़े स्वादिष्ट भोजन खिलाये। (आज भी उस देश में सब यात्री कन्याओं को यथाशक्ति धन, अन्न, वस्त्र आदि देते हैं) जल लेने के लिये एक कन्या को कहा, उसने उत्तर दिया कि मेरे पास कौल (जिसे पंजाबी तथा डोगरी में कटोरी कहते हैं) नहीं है तो देवी ने उसे अपनी शक्ति से सोने का कौल (कटोरा) दिया और पास में ही एक छोटे से कुण्ड से जल भी भर दिया। कौल के कन्धोलने अर्थात् हिलाने से उस स्थान का नाम कौल-कन्धौली पड़ गया। अतः यात्रा का प्रथम स्थान यही कौल कन्धौली है।

देवा भाई

अब कौल कन्धौली के स्थान पर भगवती की महिमा सुनकर दूर-दूर से भक्त जन दर्शनों को आने लगे और मनोवांछित फल की प्राप्ति करने लगे। माता वैष्णों बालिकाओं के साथ बाल-क्रीड़ायें किया करतो थी। इसी क्षेत्र में माई देवा भगवती दुर्गा की बड़ी पुजारिन थी। बचपन से लेकर सारी आयु उसने, देवी पूजा में व्यतीत करदी थी उसको दर्शन देकर मां वैष्णों ने उसका नाम अमर कर दिया। उसे यह वरदान दिया कि मेरी पूजा के साथ तेरी पूजा भी होगी, जो तेरा दर्शन करके मेरा दर्शन करेगा, उसके सब मनोरथ पूर्ण होंगे। उस स्थान को (देवा माई या माई देवा का ढक कहते हैं)। किन्तु यह स्थान भी नयी पक्की सड़क पर न होने के कारण भक्तों से दूर हो गया है, यात्री थोड़े समय में सब कुछ प्राप्त करना चाहते हैं।

अतः देवा माई पर कोई विरला व्यक्ति ही जाता है; किन्तु यह स्थान सर्व प्रथम दर्शनीय है, इसकी बड़ी महिमा है, मार्ग बड़ा सुन्दर एवं रमणीय है।

भक्त श्रीधर पर कृपा

माई देवा के बंश में हंसाली में एक श्रीधर नामक भक्त निवास करते थे। उन्होंने अपनी सब सम्पत्ति हवन यज्ञादि द्वारा माता दुर्गा की भेंट चढ़ा दी थी, अपने सच्चे सेवक का उद्धार करने के वास्ते माता वैष्णों माईदेवा से सिंह पर सवार होकर हंसाली पधारी और उस सेवक को दर्शन दिये तथा उसके सब दुःख संकटों का नाश किया।

भैरों मन्डली को भण्डारा

जब दुष्ट भैरव के छूने पर माता वैष्णों अकस्मात गायब हो गयीं थी। तब वह बड़ा व्याकुल होकर जम्मू नगर की ओर माता को खोजने के लिये अपने शिष्यों सहित चल पड़ा। मार्ग में हंसाली में उसने सुना कि श्रीधर भक्त पर माता वैष्णों की कृपा है और स्वयं माता वैष्णों भी हंसाली में निवास कर रही है। तब भैरव ने श्रीधर को अपने समस्त शिष्यों सहित भण्डारा देने पर बाध्य किया। अपने परम सेवक को संकट में देखकर माता जी ने भक्त श्रीधर को दर्शन देकर कहा "तुम निश्चिन्त होकर भण्डारा कह दो"। तब भक्त श्रीधर ने माता के विश्वास पर भैरव को हां करदी। इधर माता वैष्णों ने एक क्षण के अन्दर अपनी दिव्य शक्ति से एक सुन्दर भवन, सोने चांदी के बर्तन, हर प्रकार के भोजन मिठाईयां और फल एकत्र कर दिए तथा स्वयं भोजन परोसने के लिये बाहर आई और भैरव मण्डली के सब नाथों को भूमिका नामक स्थान पर मनोवांछित भोजन देकर तृप्त कर दिया। अन्त में भैरवनाथ स्वयं भोजन पाने की इच्छा से माता के सम्मुख आया और मद्य मान्स का भोजन मांगा। माता दुर्गा ने उत्तर दिया कि मद्य मान्स राक्षसों का भोजन है मैं धर्म के विरुद्ध भोजन देने में असमर्थ हूँ। भैरव तो मौके की ताक में था। उसने समय पाकर माता वैष्णों का हाथ पकड़ना चाहा भगवती अपनी शक्ति से अन्तर्धान हो गई। भैरव नाथ भी अपनी योग शक्ति द्वारा त्रिकूट पर्वत की ओर माता वैष्णों के पीछे चल दिया।

बाल गंगा या बाण गंगा

दूर जाने के बाद पहाड़ के नीचे बाण गंगा नामक स्थान पर जहां पर भगवती ने कुछ क्षण विश्राम किया था, वहां गंगा में पानी पीते हुए माता के शेर को भैरवनाथ ने दूर से देखा। कहते हैं कि भगवती ने इस स्थान पर बाण द्वारा पृथ्वी से जल निकाला था। इस कारण से इसे बाण गंगा कहते हैं। तथा भगवती

ने यहां स्नान किया था श्रीर बाल (केश) धोये थे । इस कारण इसे बाल गंगा भी कहते हैं ।

चरणपादुका

माता वैष्णों भैरव के उस स्थान पर श्राते-श्राते चरण पादुका के स्थान पर पहुँच गयी थीं । कहते हैं यहां पर भगवती ने अपने चरण पहाड़ पर रखे थे श्रौर भगवती की पादुका 'खड़ाऊ'' जल्दी में इस स्थान पर रह गई थी । अतः इस स्थान को चरण पादुका कहकर पुकारा जाता है । कुछ लोग यह भी कहते हैं कि दक्ष के यज्ञ के उपरान्त सती के चरण इसी स्थान पर गिरे थे श्रौर इसी कारण इसका नाम ५१ शक्ति पीठों में से एक है किन्तु इसमें कई एक मत हैं ।

श्रादकुमारी

जिस समय भैरवनाथ चरण पादुका के स्थान पर माता का पीछा करते-करते पहुँच गया । तब माता शीघ्र ही श्राद कुमारी के स्थान पर जा पहुँची श्रौर भैरवनाथ भी उनके पीछे-पीछे वहीं श्रा गया । माता वैष्णों उसी क्षण गर्भ गुफा जिसे गर्भ जून: भी कहते है, से निकल कर आगे चली गई श्रौर त्रिकूट पर्वत की सुन्दर गुफा में जाकर फिर से विराजमान हो गई । लंगरवीर को दरवान बनाकर उस गुफा के बाहर खड़ा किया श्रौर देवताश्रों ने वहां पहुँच कर माता वैष्णों का वेदोक्त मन्त्रों से पूजन श्रादि किया । इसके अतिरिक्त रामावतार के समय (प्रथम कथा के अनुसार) भगवती वैष्णों को कलकी अवतार तक कुमारी अवस्था में रहने का आदेश होने के कारण भी इस स्थान को श्राद कुमारी कहने लगे, जो बाद में श्राध क्वांरी पड़ गया, वैसे कुमारी एक शक्ति का नाम भी है ।

भैरव का वध

बहुत दिनों तक तलाश करने के बाद भैरवनाथ भी उसी गुफा तक श्रा पहुँचा । द्वार पर लंगरवीर से पूछने लगा तुम कौन हो ? लंगरवीर ने उत्तर दिया कि मैं माता वैष्णों का सेवक हूँ । भैरव ने कहा तुम्हारी माता ने निमन्त्रण दिया था । उसको कह दो मुझे मद्य मान्स का भोजन देवें । यह सुनकर लंगरवीर ने क्रोध में श्राकर कहा — रे पापी दुष्ट, यहां से चला जा । नहीं तो तेरा सिर काट दिया जायेगा । भैरव ने कहा — मुझे कोई मनुष्य नहीं मार सकता । मैंने तपस्या करके वरदान लिया हुश्रा है । मैं किसी मनुष्य से न मरूं । तब लंगरवीर श्रौर भैरव का बड़ा युद्ध हुश्रा । तब माता वैष्णों ने गुफा से निकल कर अत्यन्त क्रोध में श्राकर त्रिशूल से भैरव का सिर काट दिया । कटा हुश्रा सिर तब भगवती के आगे प्रार्थना

करने लगा । माता मुझे माफ करो, मैंने अनेकों अपराध किये है, मुझे क्षमा करो। मेरा उद्धार करो, में तुम्हारी शरण में हूँ । मुझे ऐसा वरदान दो कि मेरा नाम संसार में बना रहे ।

पुत्र कुपुत्र हो जाते हैं किन्तु माता कुमाता नहीं होती, उसकी प्रार्थना सुनकर माता दुर्गा को दया आ गयी और तथास्तु ऐसा कहकर वरदान दिया कि, मेरी पूजा के साथ तेरी पूजा भी होगी जो मेरा दर्शन करेगा वह तेरा दर्शन अवश्य करेगा। उसकी यात्रा सफल होगी, किन्तु तेरा तिलक लगाकर जो मेरा दर्शन करेगा उसकी यात्रा सफल न होगी क्योंकि तू पापी है और दुराचारी है। केवल मेरी अनुग्रह से तू मेरे धाम को प्राप्त होगा ।

इतना कहकर माता वैष्णों ने सुदर्शन चक्र से भैरव का सिर दो कोस की दूरी पर गिरा दिया जो गिरते ही पत्थर का हो गया और भैरव का शरीर गुफा के द्वार पर ही पड़ा रहा और वहीं पत्थर हो गया।

मां का वरदान

भैरव नाथ के मारे जाने का समाचार सुनकर तथा भैरव को माता द्वारा मिली गति सुनकर उसके समस्त शिष्यगण और अनुयायी भी मां के भक्त बन गय। वह त्रिकूट पर्वत में माता की गुफा के बाहर आकर हाथ जोड़ कर भगवती की प्रार्थना करने लगे, कि मां हम बड़े अपराधी हैं हमने भी भैरव की तरह बड़े पाप किये हैं। जिनका फल घोर नरक है हम तुम्हारी शरण में हैं। हमारा भी भैरव की तरह उद्धार करो। मां ने प्रसन्न होकर उन सब को वरदान दिया कि ऐसा ही होगा, जो मेरी कथा को सुनेगा और मेरे दर्शनों को यहां आयेगा, उसकी सब मनोकामनाएं पूर्ण होगी। स्त्री पुत्र धन आदि का सुख प्राप्त होगा। ऐसा वरदान देकर माता अन्तर्धान हो गई।

जो व्यक्ति श्रद्धा और प्रेम से वैष्णों देवी के दर्शनों को जाता है वह सब सुखों को भोग कर अन्त में मुक्ति को प्राप्त करता है और घोर कलियुग में भी प्रत्यक्ष चमत्कार मा वैष्णों के दर्शनों से मिलता है। मानों आज भी मां वैष्णों उस स्थान पर खेल रही है और सब की मनोकामनाएं पूरी कर रही है।

तृतीय प्रकरण

पथ प्रदर्शिका [गाइड]

पठानकोट से जम्मू

हम बस अथवा रेलगाड़ी द्वारा पठानकोट पहुँच सकते हैं। देश के विभाजन से पूर्व यात्री (१) अमृतसर से रेल द्वारा नारोवाल होते हुए सियालकोट, (२) लाहौर से गुजरांवाला तक रेल द्वारा तथा गुजरांवाला से इक्का सियालकोट होते हुए बस द्वारा जम्मू (३) वजीरांबाद नामक रेलवे स्टेशन से रेल द्वारा सियालकोट तथा जम्मू पहुँच कर होती थी। देश के विभाजन के पश्चात उपरोक्त स्थानों का पाकिस्तान में विलय हो जाने के कारण केवल पठानकोट से ही जम्मू पहुँचा जा सकता है। अत: पठानकोट का महत्व कई गुणा अधिक बढ़ गया है। यहीं नहीं पठानकोट से अमृतसर, जालन्धर, डलहौजी, चम्बा, कांगड़ा, कुल्लू आदि के मार्ग भी मिलते हैं। इस प्रकार से पठानकोट, जम्मू-काश्मीर तथा हिमाचल प्रदेश का प्रवेश द्वारा कहलाता है।

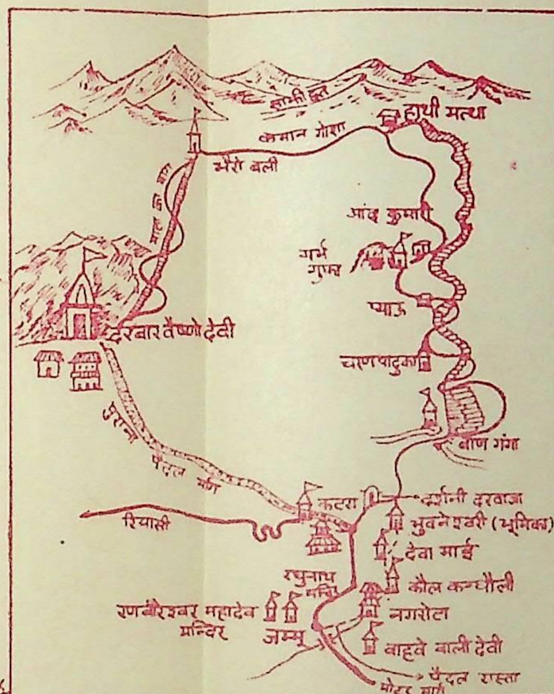
पठानकोट रेलवे स्टेशन बड़ा सुन्दर और विशाल बना दिया गया है। प्रथम तथा द्वितीय श्रेणी के विश्रामालयों के अतिरिक्त तृतीय श्रेणी का विश्राम गृह बड़ा विशाल है शौच तथा स्नान का भी विशेष प्रबन्ध है। स्टेशन से बाहर जम्मू-काश्मीर राज्य का पर्यटन केन्द्र (Touriest Bureau) है तथा श्री अमरनाथ जी के दर्शनों को जाने वाले यात्री या श्रीनगर जाने वाले सैलानी इसी केन्द्र से बस द्वारा सीधे काश्मीर पहुँच जाते हैं। उन्हें जम्मू ठहरने की आवश्यकता नहीं रहती और समय भी बच जाता है। उत्तरी रेलवे के मुख्य एजेन्ट सर्वश्री एन० डी० राधाकृष्ण के तत्वाधान में भी सीधी काश्मीर मोटर-बस जाती हैं। डलहौजी-चम्बा तथा कुल्लू या ज्वालामुखी और कांगड़ा आदि जाने वाले यात्रियों को स्टेशन से थोड़ी दूर बाहर जाकर हिमाचल राज्य की बस उपलब्ध रहती हैं।

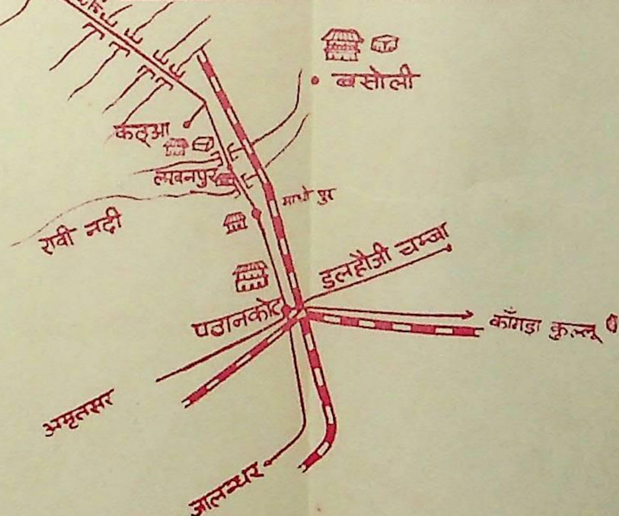
जम्मू जाने वाले मां वैष्णों के प्रेमियों के लिये रेलवे स्टेशन से लगभग आधा मील की दूरी पर अमृतसर तथा जम्मू जाने वाली सड़क पर बस स्टैण्ड पर जाना पड़ेगा। रिक्शा तथा कुल्ली उपलब्ध हैं।

पठानकोट में कई एक बाजार हैं जिनमें गांधी चौंक मुख्य स्थान है। पठानकोट में भगवती आशा पूरणी का प्राचीन मन्दिर दर्शन करने योग्य है जो कि रेलवे स्टेशन से लगभग १½ किलोमीटर की दूरी पर नगर के मध्य में स्थित है।

वैष्णो देवी यात्रा मानचित्र







संकेत

1. सीढ़ी मार्ग
2. नया पैदल मार्ग
3. पुराना पैदल मार्ग
4. मन्दिर
5. पक्का रास्ता
6. गाँव
7. रेलवे लाईन
8. कच्चा मार्ग

भारतीय ज्योतिर्विज्ञान अनुसन्धान संस्थान
लक्ष्मी नगर, सहारनपुर उ॰ प्र॰

बस स्टैण्ड पर पंजाब रोडवेज तथा निजी बसें जम्मू के लिये प्रत्येक २० मिनट के अन्तर पर छुटती रहती हैं। पठानकोट से जम्मू १०८ किलो मीटर है तथा किराया लगभग २-३५ है। टिकट लेते समय कई बार काफी भीड़ रहती है। अतः क्यू लगाकर टिकट लेना पड़ता है। अपने सामान और जेब का बड़ी सावधानी से ध्यान रखना चाहिये, क्योंकि ऐसे समय पर जेबकतरे और चोर अपने मौके की ताक में लगे रहते हैं।

बस चलते ही भक्त जन ऊंचे-ऊंचे शब्दों में माता वैष्णों की जय जयकार बोल कर यात्रा का श्रीगणेश करते हैं। तीव्र गति से चलती हुई बस मलकपुर तथा सुजानपुर होती हुई १४ किलो मीटर की दूरी पर स्थित माधोपुर नामक स्थान पर पहुँचती है जो कि पंजाब का अन्तिम नगर है। पंजाब की विख्यात नदी रावी (ऐरावती) को पार करके बस जम्मू-काश्मीर के प्रथम नगर लखनपुर पहुँच जाती है। यहां पर एक छोटा-सा दुर्ग भी है जो कि पुलिस आदि के उपयोग में आता है। जाती तथा लौटती बार लगभग १५ मिनट तक बस यहां रुकती है और सामान की जानकारी अधिकारियों द्वारा की जाती है। जम्मू-काश्मीर राज्य में कुछ एक वस्तुओं के आयात तथा निर्यात पर प्रतिबन्ध है। अतः सामान की पड़ताल की जाती है। लखनपुर से बसोली नामक नगर, जो कि ऐतिहासिक दृष्टि से बड़ा ही प्राचीन एवं महत्वपूर्ण है लगभग ३० किलो मीटर की दूरी पर उत्तर को है और पक्की सड़क से जुड़ा हुआ है।

लखनपुर से आगे विशाल एवं सुन्दर सड़क अनेक ऊंचे नीचे स्थानों से जाती हुई मघर नामक बरसाती नदी के पुल को पार करके कठूआ पहुँचती है। कठूआ नगर मुख्य सड़क से ३ कि० मी० पश्चिम को है और मुख्य सड़क से पक्की सड़क द्वारा मिला हुआ है। सड़क पर कठूआ की औद्योगिक भूमि है और कई एक कारखाने इत्यादि उसमें लगे रहने से उसमें काफी रौनक रहती है। कठूआ से आगे चल कर कई एक छोटे नदी नालों को लांगते हुए खदरेकू नाम के बड़े नाले को पार करके भिरनोट नामक छोटा-सा गांव आता है। यहां से चलकर उज्ज नामक एक विशाल नदी को पार करके राजबाग, चन्नी तथा चंडवाल नामक छोटे छोटे गांव से होते हुए तरनहा नामक नदी के पुल को पार कर आगे हीरा नगर के निकट बस पहुँच जाती है। हीरा नगर मुख्य सड़क, मे पश्चिम की ओर लगभग ३½ मील की दूरी पर है। बस दौड़ती हुई कूटा नामक गांव को जाने वाली सड़क के निकट पहुँचती है। ध्यान रहे इस स्थान पर पठानकोट और जम्मू ठीक बराबर दूरी पर रह जाते हैं अर्थात् ५४ कि० मी० दोनों ओर के स्थान हैं। छोटे बड़े नाले तथा गांव का सुरम्य दृश्य देखते बसे ६८ कि० मी० की दूरी पर स्थित साम्भा नामक नगर में पहुँचती है। यहां पर खाने-पीने आदि के सामान की कई एक दुकानें हैं। साम्भा देश विभाजन के पूर्व एक रियासत थी और नगर सड़क से थोड़ी दूरी पर उत्तर की ओर पहाड़ी पर

बसा है। यहां से जम्मू ४० कि० मी० रह जाता है। साम्भा से चलकर बसंतर नामक नदी के पुल को पार कर सड़क के बिल्कुल निकट चीची माता का छोटा-सा किन्तु सुन्दर मन्दिर पहाड़ी पर नजर आता है, किन्तु बस न ठहरने के कारण दूर से दर्शन करने पड़ते हैं। तत्पश्चात देवक नदी के पुल को पार कर ७७ कि० मी० की दूरी पर विजयपुर नामक छोटा-सा नगर आता है तथा ११ कि० मी० आगे जाने पर यख नामक गांव, तरोड़, बामनादीबड़ी और कालूचक गांव से होते हुए आगे बढ़ते हुए जम्मू की सुन्दर नगरी नजर आने लग जाती है। कालूचक के निकट से पुरमण्डल नाम के विख्यात तीर्थ को सड़क जाती है। जम्मू के औद्योगिक अस्थान से थोड़ी आगे चलकर सतवारी नामक बस्ती से होते हुए तवी नदी के पुल को पार कर जम्मू नगर में प्रवेश करके बस स्टैण्ड पर बस जा पहुँचती हैं।

जम्मू नगर

आधुनिक जम्मू को बसाने वाले महाराजा गुलाब सिंह और उनके वीर पुत्र महाराजा रणवीर सिंह हैं। इन्हीं के अथक परिश्रम से जम्मू का सुन्दर नगर विद्या में दूसरी काशी, तीर्थों में मुख्य तीर्थ और दर्शनीय स्थल बन गया था। बस स्टैण्ड से उतरते ही नगर में प्रवेश हो जाता है। पहाड़ी पर बसा शहर बड़ा ही सुन्दर और सुसज्जित है। देश विभाजन से पूर्व सियालकोट से रेल द्वारा सम्बन्धित था किन्तु अब पठानकोट से रेलवे लाईन जम्मू तक बिछाई जा रही है और आशा है कि कुछ ही वर्षों में रेलवे लाईन जम्मू पहुँच जावेगी।

जम्मू का महत्व वैसे भी भूगोलिक दृष्टि से बहुत बड़ा है। यहां से श्रीनगर पुंछ, छम्ब, रणवीरसिंहपुरा, राजोरी, पुरमण्डल, कटड़ा, रियासी, उधमपुर, भद्रवाह, अखनूर और किस्तवार के मार्ग निकलते हैं। यहां पर लगभग २२ होटल और १३ धर्मशालाएं, १४ मन्दिर, दरगाह जनाब नियामत उल्लाशाह वली, हुजरा पीर लखदात्ता और एक विशाल जामिया मस्जिद है (जो कि अभी बन रही है।)

यात्रियों के ठहरने के लिए एक सरकारी सराय बस स्टैण्ड के पास ही हाल ही में बनाई गई है और शेष के नाम निम्न हैं। यात्री अपनी २ सुविधा के अनुसार कहीं भी ठहर सकते हैं। (१) विनायक मिश्र धर्मशाला (२) गुरूद्वारा सुन्दर सिंह साहब (३) गुरूद्वारा सिंह सभा (४) श्री रघुनाथ मन्दिर (५) श्री रणवीरेश्वर मन्दिर (६) जनज घर कुकरायन ब्रादरी (७) महाजन सभा (८) जनज घर धर्मार्थट्रस्ट (९) डोगरा ब्राह्मण सभा (१०) गीता भवन (११) मन्दिर दीवान ज्वाला सहाय और (१२) वेद मन्दिर।

जम्मू में शुद्ध वैष्णों भोजनालय स्थान २ पर हैं किन्तु मांसाहारी भोजनालय और आधुनिक ढंग के होटल भी बहुत हैं। जो लोग वायुयान से श्रीनगर जाते हैं या जिनको जम्मू में रहना होता है वह लोग प्रायः इन होटलों में विश्राम करते हैं।

जम्मू में मुख्य २ बाजार ये हैं। (१) श्री रघुनाथ बाजार (२) पक्का डिंगा (३) पुरानी मण्डी (४) लिंक रोड़ (५) मोती बाजार (६) कनक मण्डी, (७) गुम्मट बाजार ८) दरबार गढ़ (९) राजेन्द्र बाजार (१०) रैंजीडेन्सी रोड़ (११) एगजीब्यूशन मारकीट तथा (१२) पैरेड बाजार।

जम्मू में अनेक दर्शनीय मन्दिर हैं जिनमें श्री रघुनाथ मन्दिर तथा श्री रणवीरेश्वर महादेव अखिल भारत में बेजोड़ है। श्री रघुनाथ मन्दिर नगर के मध्य में बहुत बड़े स्थान में स्थित है। मुख्य मन्दिर भगवान राम का है तथा उसके चारों ओर १५ भव्य मन्दिर, लाखों की संख्या में सालिग्राम की मूर्तियां, भिन्न भिन्न देवी देवताओं, ऋषियों, अवतारों तथा ग्रहों की मूर्तियां स्थापित की गई हैं। मुख्य मन्दिर के बाहर बहुत बड़ी हनुमान जी की मूर्ति है तथा दूसरी ओर महाराजा रणवीरसिंह जी का भव्य चित्र है जिन्होंने इस विशाल मन्दिर को तथा अन्य मन्दिरों को बनवाया था । इसी रघुनाथ जी के मन्दिर में श्री रणवीर संस्कृत पुस्तकालय, डोगरी रिसर्च इन्सटीटयूट, छात्रालय, धर्मशाला तथा महाराजा गुलाबसिंह, महाराजा रणवीर सिंह, महाराजा प्रताप सिंह, महाराजा अमरसिंह आदि आदि की भव्य समाधियां हैं जिन पर स्वर्ण जड़ित कलश चमक रहे हैं। मन्दिर के सिंह द्वार का जीर्णोद्धार महाराजा कर्ण सिंह जी ने करवाया है।

श्री रणवीरेश्वर महादेव का भव्य मन्दिर बस स्टैंन्ड के बिलकुल निकट है। इस मन्दिर में कई लाख नवदेश्वर, एकादश स्फटिक मणि के शिवलिङ्ग तथा एकादश बड़े शिवलिङ्ग विराजमान हैं। इसके अतिरिक्त निम्न मन्दिर भी अवश्य यात्रियों को देखने चाहिएं और दर्शन करके अपना जीवन सफल बनाना चाहिए।

(१) श्री पंच वक्त्र महादेव (२) श्री अमरेश्वर महाराज (३) मन्दिर दीवान ज्वाला सहाय (४) मन्दिर रघुनाथ जी पुरानी मण्डी (५) श्री राधा कृष्ण मन्दिर (६) श्री नरसिंह जी महाराज का मन्दिर (७) शिवमन्दिर पीरखोह (८) रानी का मन्दिर जुलहा कामुहल्ला (९) मन्दिर श्री गदाधर जी (१०) महा लक्ष्मी मन्दिर (११ सत्य नारायण मन्दिर (१२। दुर्गा मन्दिर तथा (१३) बाहवे वाली देवी का मन्दिर (जम्मू से दूसरी ओर तवी नदी के पार एक छोटी सी पहाड़ी पर राजा बाहु लोंचन के एतिहासिक दुर्ग में है । याद रहे यहां पर भगवती काली की प्रसिद्ध एवं चमत्कारी मूर्ति है जो कि महाराजा रणजीत सिंह के समय में गुजरांवाला से हाथी पर सजा कर यहां लाई गई थी और यहां के पहले वाली मूर्ति हाथी पर रख कर गुजरांवाला भेजी गई थी) तथा (१४) श्री राधा स्वामी सतसंग भवन हैं। प्राचीन राजाओं के महल जो मण्डी मुबारक दरबार गढ़ में खड़े हुए अतीत काल की गाथा को मौन रूप से कह रहे हैं देखने योग्य हैं। इसके साथ २ गुलाब भवन, राजतिलक स्थान तथा आकाशवाणी केन्द्र दर्शनीय स्थलों में से एक है।

जम्मू से यात्री लोग वापसी पर अखरोट, शहद, बन्फशा, धूप, राजमाश (राजमाश थोड़ी मात्रा में ले जाने की राज्य की ओर से अनुमति है) बटक, सूखे मेवे, काश्मीरी शाल दोशाले तथा अन्य काश्मीरी सामान खरीद कर लाते हैं।

जम्मू के निकटवर्ती तीर्थ

(१) पुरमण्डल: – जम्मू से लगभग १० मील की दूरी पर स्थित पठानकोट जाने वाले मोटर मार्ग पर कालू चक नामक स्थान से पुरमण्डल को मार्ग जाता है। जम्मू से पुरमण्डल लगभग ३० मील की दूरी पर है और मोटर बस द्वारा यहां पहुँचा जा सकता है। मार्गशीर्ष कृष्ण चतुर्दशी (मघेर चौदश) को यहां हजारों यात्री एकत्र होते हैं और मेले का रूप बन जाता है।

यहां पर पवित्र देविका नदी गुप्त रूप से बहती है और यात्री लोग गढ़ा खोदकर स्नान करते हैं। यहां अन्य छोटे बड़े मन्दिरों को छोड़कर महर्षि कश्यप के समय का भगवान शंकर का स्वर्ण मन्दिर है और उसी के साथ हजारों शिवलिङ्ग स्थापित किये गये हैं। यहां पर कई एक दुकानें धर्मशालाएं एवं अन्य रहने के स्थान हैं। इस क्षेत्र को उत्तारी भारत की गयाजी भी कहते हैं क्योंकि पवित्र देविका का महात्मय गगा जी से भी बढ़कर पुराणों में बताया गया है। गिरि शृंखलाओं के मध्य बसा यह पुण्य तीर्थ एक रमणीय स्थल भी है तथा इसका सांस्कृतिक महत्व भी है। यहां प्राचीन काल के पहाड़ी शैली के दुर्लभ भिति चित्रों का अमूल्य भण्डार है।

महाराजा रणजीत सिंह भी इस स्थान की यात्रा को आये थे और उनके समय की बनी धर्मशाला इस बात की गवाही दे रही है। महाराजा गुलाब सिंह ने इस स्थान की खोज करके इसे आधुनिक रूप प्रदान किया था। यहां से पैदल कटड़ा एवं शुद्ध महादेव जाने के मार्ग हैं।

(२) उत्तरवहनी: – पुरमण्डल से २ मील के लगभग नीचे की ओर देविका उस स्थान में उत्तार की ओर बहती है। इसी स्थान को उत्तरवहनी कहते हैं, तथा इसकी महिमा शास्त्रों में विशेष रूप से लिखी गई है। महाराजा रणवीर सिंह जी की इच्छा थी कि उत्तरवहनी के स्थान पर एक ऐसा तीर्थ स्थल निर्माण करवाया जावे जहां पर समस्त भारत को तीर्थों का पुण्य मिल सके। उन्होंने यहां अनेकों शिवमूर्तियां बाहर से मंगवाई और मन्दिर बनवाने शुरू करवा दिये। देवयोग से उनका स्वर्गवास हो जाने से उनका स्वप्न अधूरा रहा और वह सब सामग्री अभी ज्यों की त्यों वहां पर बिखरी पड़ी है।

(३) शुद्ध महादेव: – जम्मू श्रीनगर मार्ग पर (उधमपुर के निकट) शुद्ध पड़ाव से २ मील आगे जाकर पूर्व की ओर पैदल मार्ग जाता है। इस मार्ग में मुख्य

सड़क से साढ़े चार मील पर पहले गौरी कुण्ड नामक तीर्थ आयेगा। यहां पार्वती का मन्दिर है। यहां से ३ मील आगे शुद्ध महादेव का स्थान है। यह स्थान भी देविका नदी के तट पर ही है और पुण्य क्षेत्र माना गया है। यहां पर एक बड़ा त्रिशूल है, जिसके दो टुकड़े हैं। कहते हैं कि भगवान शंकर ने सुधन्तर नामक राक्षस को मारा था जिससे त्रिशूल टुट गया था। शुद्ध महादेव से डेढ़ मील दूर पर्वत में सहस्र धारा नामक तीर्थ है। वहां पर पर्वत से जलधारा गिरती है। यात्री वहां स्नान करते हैं। मार्ग में एक छोटा सा गोकर्ण मन्दिर आता है। शुद्ध महादेव को पैदल मार्ग पुरमण्डल से भी जाता है।

(४) उधमपुर: – जम्मू से ६३ मील दूर श्रीनगर मार्ग पर देविका नदी के तट पर यह सुन्दर नगर हैं। समुद्रतल से २३४८ फिट की ऊंचाई पर स्थित है। स्वास्थ्य प्रद होने के साथ२ फौजी छावनी तथा मण्डी भी है। यहां देविका नदी के तट पर भगवान शंकर का प्राचीन मन्दिर है। मन्दिर के आस पास प्राचीन भग्नावेष हैं। देविका के दोनों तटों पर पक्के घाट बने हुए हैं। शिव मन्दिर के सामने ही देविका के दूसरे तट पर श्री राम मन्दिर भी दर्शन करने योग्य है। यहां बैशाख में मेला भरता हैं। यहां से पैदल मार्ग वैष्णों देवी को भी जाता है।

(५) मेला झिड़ी:—जम्मू के लगभग १० मील पर यह स्थान स्थित है। कार्तिक पूर्णिमा को यहां पर भारी मेला लगता है और दूर दूर से यात्री दर्शनों को आते हैं। कई यात्री यहां से होकर वैष्णों देवी कीं यात्रा करते हैं। यहां पर बाबा जितो और बूआ कुड़ी का प्रसिद्ध स्थान है और उसी स्थान पर मेला भी लगता है।

(६) सरूई एवं मानससर:—जम्मू से २४ मील दूर २०५० फिट की ऊंचाई पर स्थित घने जंगलों में सरूई नामक सरोवर लगभग पोने दो मील के घेरे में है और यहां से आठ मील दूर मानस नामक सरोवर महाभारत के काल से प्रसिद्ध हैं। अभी तक मार्ग पैदल का है किन्तु २३ लाख रुपए की योजना जम्मू काश्मीर राज्य ने इस स्थान तक पक्की सड़क एवं पर्यटन केन्द्र बनाने के लिये तैयार की हैं। दोनों सरोवर नीचे से आपस में मिले हुए हैं। कुछ वर्षों में यहां तक जाने की सुविधा होने पर यात्री इस सुरम्य एवं पवित्र स्थान का आनन्द ले सकेंगे। कहते हैं डोगरा शब्द अर्थात् द्विगर्त जिन दो झीलों के नाम से पड़ा है वह यही झीलें हैं।

(७) शिव खोड़ी गुफा:—जम्मू से सर्व प्रथम अखनूर तथा उससे आगे पुंछ जाने वाली सड़क पर कालीधार पहुँचना पड़ता है। यहां से ७ मील के पैदल पहाड़ी मार्ग से रांसु पहुँचकर ६ मील की दूरी पर शिव खोड़ी की डेढ़ मील लम्बी भारत की विख्यात गुफा स्थित है। गुफा में भगवान भोले नाथ का प्रसिद्ध स्थान है। शिवरात्री पर हजारों भक्त यहां पर दर्शनों को एकत्र होते हैं और सारी रात्रि पूजन होता रहता है। स्थान दर्शन करने योग्य होने के साथ २ एक एतिहासिक

स्थल भी है। गुफा का प्रवेश द्वार ३० फिट ऊंचा, २७ फिट चौड़ा और ६० फिट लम्बा है और गुफा के अन्दर १५ फिट चलने के बाद बड़े पतले और सकरे दरार से निकलना पड़ता है जिसे गर्भ जून कहते हैं। लगभग आधा मील इसी प्रकार टार्च लेकर चलने के बाद एक ८० फिट के लगभग चौड़े और १०० फिट के लगभग लम्बे विशाल कमरे में भगवान शंकर की मूर्ति है। कमरे की दीवारों पर प्राकृतिक एतिहासिक और पौराणिक चित्र बने हुए हैं। शंकर जी की मूर्ति पर स्वयं पानी टपकता रहता है।

जम्मू से कटड़ा (पैदल मार्ग)

आज से लगभग २५ वर्ष पूर्व, श्री वैष्णों देवी की यात्रा जम्मू से ही पैदल शुरू की जाती थी। उस समय न तो आज की तरह मोटर कारें थी और न लोगों को इतनी जल्दी ही रहती थी जैसे कि आज के युग में है। कई वर्षों तक लोग जम्मू से तांगों और खच्चरों पर सवार होकर कटड़ा पहुँचते थे। पैदल यात्रा के दो मार्ग हैं। (१) पुरमण्डल होकर (२) कौल कन्धोली होकर।

पुरमण्डल वाला पेदल मार्ग

जम्मू से तवी में स्नान करके लोग सर्व प्रथम बामनां दी बड़ी में आकर रात को विश्राम करते थे। (यह स्थान अब जम्मू से पठान कोट जाने वाले मार्ग पर स्थित है) यहां से प्रातः काल चलकर उत्तरवहनी पहुँचकर वहां स्नान आदि करके पुरमण्डल पहुँच जाते थे। पुरमण्डल में रात भर विश्राम करके तूतां वाली बावली तथा कच्चे पिण्ड होते हुए कटड़ा पहुँच जाते थे।

कौल कन्धोली वाला पैदल मार्ग

जम्मू से अधिकतर यात्री इसी मार्ग से कटड़ा जाते थे। सर्व प्रथम जम्मू से नगरोटा पहुँचकर वहां भगवती कौल कन्धोली के दर्शन करते थे। कौलकन्धोली से झियूरां दी बावली तथा कौलां वाला तालाब नामक स्थान से होते हुए हट्टियां में विश्राम करते थे। यहां से सतरी-बतरी तथा हनुमान ढक होकर माई देवा के ढक (देवामाई) पर जाकर भगवती के दर्शन करते थे। यहां से टोडयां वाली और मिठयां वाली होते हुए कटड़ा पहुँच जाते थे।

मोटर मार्ग

मोटर मार्ग द्वारा जम्मू से कटड़ा लगभग ३१ मील की दूरी पर स्थित है। बस का जम्मू से कटड़ा तक किराया लगभग डेढ रूपया है और टेक्सी ३० रुपये के लगभग ली जाती है। मार्ग पहाड़ी है किन्तु सड़क बड़ी सुन्दर और निरापद है।

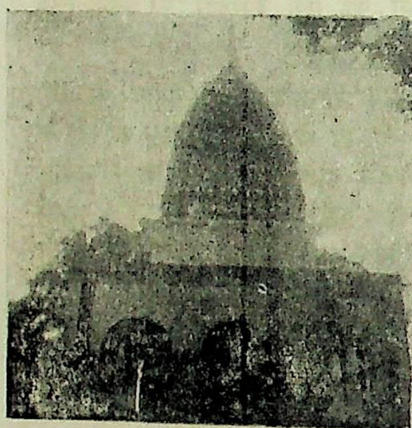
जिन यात्रियों को पहाड़ी मार्ग में घबराहट हो जाती है या जी मचलने लग जाता है उन्हें जम्मू से कटड़ा तथा कटड़ा से जम्मू की बस यात्रा में खटाई या पीपरमेन्ट की टिकियां चूसनी चाहिए। एलोपैथिक पद्धति की कई एक दवाइयां भी इसके लिये अच्छी लाभदायक हैं अस्तु।

जम्मू से लगभग ५ मील की दूरी पर नगरोटा नामक गांव सड़क के दोनों तरफ बसा हुआ है। नगरोटा में प्रवेश करने से पूर्व ही सड़क से एक फर्लाङ्ग के कच्चे मार्ग पर श्री वैष्णों देवी की यात्रा का प्रथम दर्शनीय स्थल "कौल कन्धोली" है। यात्रियों को तो मालूम नहीं होता कि कितना महत्वपूर्ण स्थान मार्ग में दर्शनों से छुट जाता है किन्तु वहां के राज्य अधिकारी यदि इस ओर ध्यान देवें तो इस स्थान पर १५ मिनट के बस के रुकने से समस्त यात्री दर्शन करके वापिस लौट सकते हैं। यहां से १६ मील की दूरी पर चढ़ाई चढ़कर नन्दनी गुफा नामक स्थान आता है। यहां पर चाय आदि की दुकानें हैं और गुफा से होकर पहाड़ के दूसरी ओर पहुँचना पड़ता है। इस स्थान से ३ मील आगे चलकर दोमेल नामक स्थान से श्रीनगर का मार्ग अलग हो जाता है और कटड़ा का अलग। यहां से श्रीनगर लगभग १५८ मील है और उधमपुर ४२ मील है तथा कटड़ा ७ मील है। अब मार्ग ढलान का हो जाता है और सामने माता वैष्णों का त्रिकूट पर्वत तथा आद कुमारी नजर आने लग जाते हैं। मार्ग में १५०० फिट से लेकर २००० फिट की ऊंचाई पर हमें होकर जाना पड़ता है। कटड़ा से लगभग २½ मील पूर्व मोटर मार्ग से २ मील के लगभग कच्चे मार्ग पर यात्रा का दूसरा दर्शनीय स्थल "देवा माई" स्थित है। यहां पर भी कोई यात्री ही अब शायद जाता हो। कटड़ा पहुँचकर बस रुक जाती है किन्तु कटड़ा से १८ मील आगे चलकर रियासी नामक गांव तक पक्की मोटर की सड़क है। रियासी चिनाव नदी के तट पर बसा छोटा सा नगर है।

कटड़ा

कटड़ा बस स्टैण्ड के बिलकुल साथ ही बाजार से मिला हुआ है। बस स्टैण्ड के निकट राज्य की ओर से एक सुन्दर सराये (टूरेस्ट रिटायरिंग सेंटर) बनी हुई है जिसमें सामान जमा करने तथा विश्राम करने का पूरा प्रबन्ध है। धर्मार्थ ट्रस्ट की सराय तथा आनन्द धर्मशाला में भी यात्रियों के ठहरने का प्रबन्ध है। प्राचीन प्रथा के अनुसार यात्री लोग अब भी कटड़ा निवासियों तथा पन्डा लोगों के घरों में रहना पसन्द करते हैं। वास्तव में उन लोगों के घरों में रहकर यात्रा का सच्चा आनन्द आ जाता है। पहाड़ की तराई में बसा कटड़ा बड़ा ही सुन्दर और प्यारा लगता है। एक लम्बा बाजार है जिसमें ढाबे (होटल) चाय तथा मिठाई की दुकानें माता वैष्णों के लिये छत्र भेंट और रबड़ के जूतों आदि की दुकानें और कुछ अन्य काश्मीरी माल की दुकानें हैं। भेंटों का सामान जिस पण्डा जी के यहां ठहराया जाता है उन्हीं से लिया जाता है।

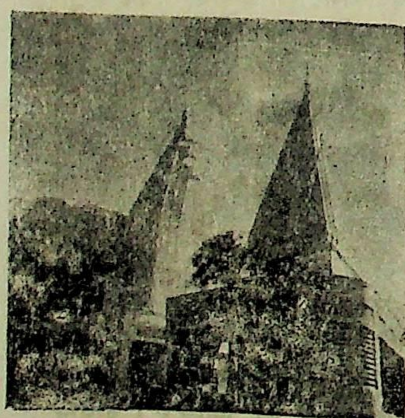
कटड़ा में भी कई एक मन्दिर तथा स्थान देखने योग्य हैं, किन्तु यात्रियों को मालूम न होने से वह दर्शन नहीं कर पाते और मन में पश्चाताप रहता है।



(चित्र महालक्ष्मी मन्दिर)

महालक्ष्मी मन्दिर

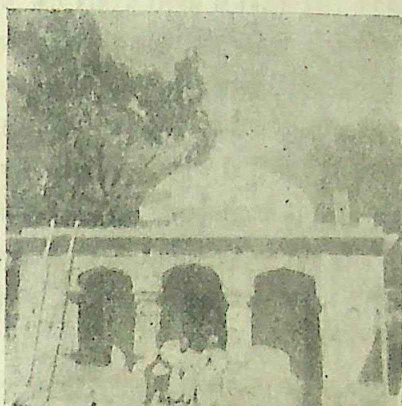
बाजार से उत्तर की ओर जाते हुए दायें तरफ कुछ ही दूरी पर यह विशाल मन्दिर स्थित है। इसका निर्माण जम्मू-काश्मीर नरेश महाराजा गुलाबसिंह के परिवार की किसी रानी साहबा ने करवाया था ऐसा कहते हैं। मन्दिर के चारों ओर यात्रियों के ठहरने के लिये अनेकों कमरे भी बने हुए हैं, किन्तु अब इस स्थान पर बहुत कम लोग ही दर्शन करने आते हैं या ठहरते हैं। मन्दिर में सफेद संगमरमर की महालक्ष्मी जी की भव्य मूर्ति है। मन्दिर का प्रबन्ध धर्मार्थट्रस्ट के आधीन है।



(चित्र स्वामी नित्यानन्द स्मारक

स्वामी नित्यानन्द स्मारक

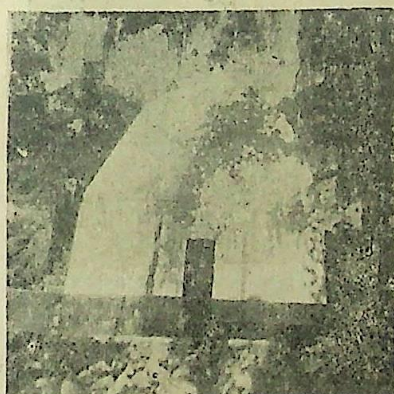
महालक्ष्मी जी के मन्दिर के बिल्कुल साथ ब्रह्मलीन स्वामी नित्यानन्द जी महाराज राज गुरू की सुन्दर समाधि है। समाधि के ऊपर आशुतोष भगवान शंकर की पिण्डी विराजमान है। साथ में ही १२१ मन वजनी लाल पत्थर की हनुमान जी की विशाल एवं चमत्कारी प्रतिमा है और उसके साथ राघवेन्द्र सरकार भगवान राम का भव्य मन्दिर है तथा श्री वैष्णों देवी मन्दिर, यात्री भवन और सस्कृत विद्यालय अभी बन रहे हैं। वास्तव में स्वामी नित्यानन्द स्मारक सभा के कर्मठ कार्य कर्त्ताओं ने अपना तन मन एवं धन लगाकर इस स्थान को स्वर्ग के तुल्य बना दिया है। कटड़ा में इतना रमणीक एवं सुन्दर कोई अन्य स्थान नहीं है। समस्त यात्रियों को इस स्थान के दर्शन करने चाहियें तथा सभा को अपनी पुण्य कमाई में से दान देकर इस योजना को पूर्ण करने में अवश्य सहायता देनी चाहि अस्तु।



(चित्र मन्दिर देवी द्वारा)

देवी द्वारा

स्वामी नित्यानन्द स्मारक से वापिस बाजार को आते समय यह प्राचीन मन्दिर मार्ग में पड़ता है। भगवती जगदम्बा का मन्दिर है और दर्शन करने योग्य है। स्वामीनित्यानद स्मारक, श्री महालक्ष्मी मन्दिर एवं देवी द्वारा तीनों मन्दिर लगभग एक ही स्थान मे स्थित हैं। अतः एक ही बार तीनों के दर्शन हो जाते हैं।



(चित्र भूमिका मन्दिर)

भूमका

कटड़ा से लगभग १½ मील की दूरी पर स्वामी नित्यानन्द स्मारक की पिछली तरफ से इस स्थान को मार्ग जाता है। मार्ग पैदल का है, किन्तु रमणीक है। यह स्थान माता वैष्णों के यात्रियों के लिये विशेष महत्व का है। भगवती ने इसी स्थान पर अपने परम भक्त श्रीधर के यहां भैरव मण्डली को भण्डारा दिया था। यहां पर भगवती का एक सुन्दर मन्दिर है और उसके साथ में सुन्दर एवं स्वच्छ जल की धारा बह रही है। धारा में जल लगभग ७ कुण्डों में से स्वतः ही निकल कर आ रहा है। कुण्डों के पास प्राचीन भगवान् शङ्कर का शिवलिङ्ग भी है। स्थान दर्शनीय है और मार्ग की सब थकान वहां पहुँचते ही दूर हो जाती है। कहते हैं भूमका के दर्शनों के बिना वैष्णों देवी की यात्रा सफल नहीं होती अस्तु।

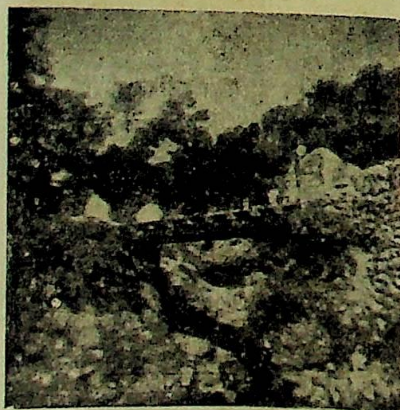
पहाड़ी यात्रा

यात्रियों को चाहिए कि वे जम्मू से कटड़ा पहुँचकर एक रात कटड़ा में विश्राम करें ताकि उन्हें किसी प्रकार की थकावट महसूस न हो और पहाड़ी यात्रा आराम से सम्पूर्ण हो जावे। जो यात्री वृद्ध अथवा अस्वस्थ तथा अंगहीन होते हैं

उनके लिए कटड़ा से वैष्णों दरबार तक घोड़े पर जाने की व्यवस्था हो जाती है तथा भारी सामान तथा छोटे बच्चों के लिए पिट्ठू (कुल्ली) का प्रबन्ध भी कटड़ा में आसानी से हो जाता है। यात्रा का श्रीगणेश प्रात: ४ बजे करना चाहिए और यात्रा में ले जाने वाला आवश्यक सामान रात को ही तैयार कर लेना अच्छा रहता है। जैसे भी हो यात्रियों को कम से कम सामान अपने साथ ले जाना चाहिए क्योंकि मार्ग में तथा वैष्णों दरबार में प्रत्येक सामान उपलब्ध हैं, फालतू सामान कटड़ा में ही छोड़ देना चाहिए। प्रातः उठकर शौच आदि से निपट कर कटड़ा से प्रस्थान करना चाहिए। मार्ग में शौच आदि करने से गन्दगी फैलने का भय रहता है। अतः शुद्धता का ध्यान रखना परमावश्यक हैं।



(चित्र दर्शनी दरवाजा)



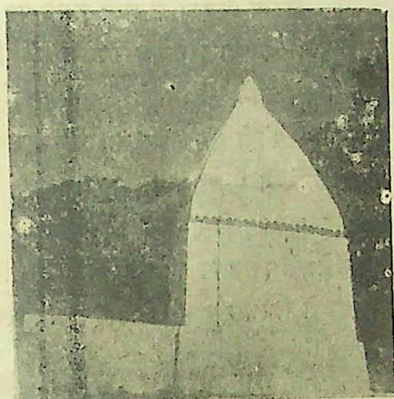
(चित्र पुल बाण गङ्गा)

दर्शनीदरवाजा

कटड़ा से ऊंचे ऊंचे स्वरों में जय जयकार करते हुये यात्री चलते हैं। लगभग एक किलो मीटर की दूरी पर दर्शनी दरवाजा नामक स्थल आवेगा। यहां पर एक बहुत बड़ा दरवाजा बना हुआ है जिसमें खड़े होकर सामने माता वैष्णों के सुरम्य त्रिकूट पर्वत का सारा दृश्य नजर आता है। दरवाजा के पास ही एक विशाल हनुमान जी की मूर्ति एवं शिवालय है। दरवाजा से यात्री लोग मातेश्वरी को प्रणाम करके आगे बढ़ते हैं और पत्थर की बनी सीढ़ियों से उतर कर नीचे सड़क पर आ जाते हैं जो कि बाण गङ्गा के साथ साथ पहाड़ी पगडण्डी के मार्ग से आगे चली जाती हैं।

बाण गङ्गा

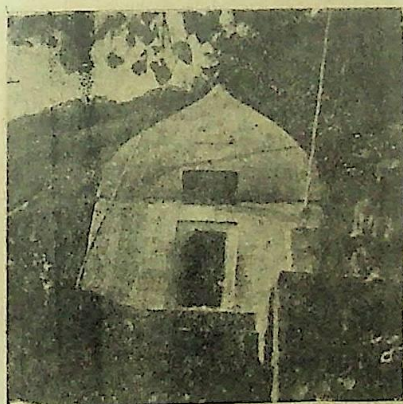
यहां पर बाण गङ्गा में सर्वप्रथम स्नान करना चाहिये और पुनः यात्रा शुरू करनी चाहिये । बाण गङ्गा पर छोटा सा पुल है और साथ में एक मन्दिर भी बन रहा है चाय तथा मिठाई की दो एक दुकानें भी हैं । स्त्रियों के नहाने का अलग प्रबन्ध है ।



(चित्र बाण गङ्गा मन्दिर)

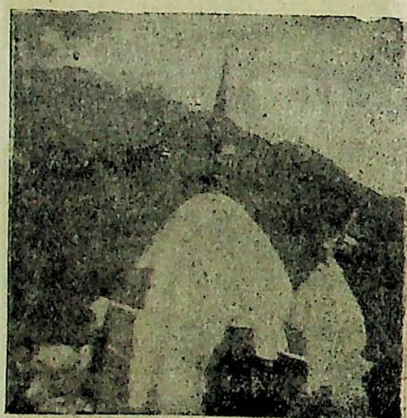
चरणपादुका

बाण गङ्गा से दो मार्ग हो जाते हैं, एक पुराना सीढ़ियों वाला जो कि दूरी मे कम तो जरूर है किन्तु थकान ज्यादा हो जाने के कारण कष्टप्रद अवश्य है । दूसरा मार्ग गोलाकार सपाट है जिस पर घोड़े आदि भी जाते है और यह मार्ग दूरी में ज्यादा होने के साथ साथ बड़ा सुगम और सुखप्रद है । अतएव माता वैष्णों की जय जयकार बोल कर किसी भी एक मार्ग पर चलना शुरू कर देवें । भगवती की शक्ति से यात्री अपने आप ही आगे बढ़ता जाता है । स्थान-स्थान पर यह दोनों मार्ग (सीढ़ी वाला तथा सड़क वाला) आपस में मिलते रहते हैं और यात्री अपनी सुविधा अनुसार एक मार्ग से दूसरे मार्ग पर चलना शुरू कर सकते हैं । बाण गङ्गा से सीढ़ियों वाले मार्ग पर पहले सीमेंट से बनी कुछ सीढ़ियों पर ऊपर चढ़ना पड़ता है तत्पश्चात पत्थर की बनी सीढ़ियों पर चढ़ाई चढ़नी पड़ती है जो कि चरणपादुका तक विशेष कठिन है और सांस फूल जाता है । चरणपादुका नामक स्थल पर एक मन्दिर है जिसमें भगवती की प्रतिमा सुशोभित हो रही है और जिसके दर्शन करते ही सब थकान दूर हो जाती है । साथ में एक चाय की दूकान तथा ठण्डे पानी का प्याऊ भी है यहां पर कुछ देर विश्राम करने के पश्चात पुनः जय जयकार करते आगे की ओर बढ़ना चाहिए क्योंकि अभी तो यह पहिला पड़ाव ही है ।



(चित्र चरणपादुका)

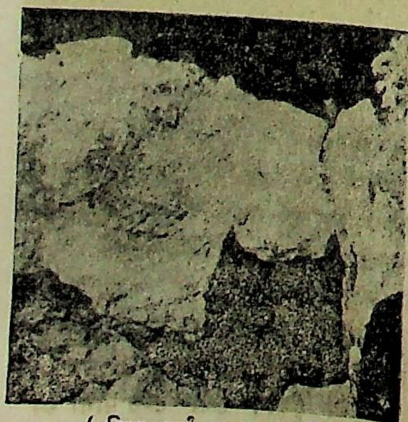
चरण पादुका से आगे चलने पर मार्ग में; यत्र–तत्र सर्वत्र मां के भक्तों ने ठण्डे पानी के प्याऊ बनवा रक्खें हैं जहां पर आंवले का आचार तथा उबले हुए चने पहिले खाने को मिलते हैं और बाद में शीतल जल पीने को मिलता है । चरण पादुका से थोड़ी दूर ऊपर जाकर एक स्थान पक्की छबील आता है जहां पर एक पक्के कमरे में प्याऊ बना हुआ है । ज्यूं-ज्यूं आप ऊपर जावेंगे नीचे कटड़ा तथा दूर दूर का पहाड़ी दृश्य बड़ा सुन्दर और मनोरम नजर आवेगा । पक्की–छबील से ऊपर देखने पर आप को आद कुमारी नामक स्थान नजर आवेगा जो कि चरण पादुका से लगभग २ मील की दूरी पर स्थित है ।



(चित्र मन्दिर आदकुमारी)

आदकुमारी

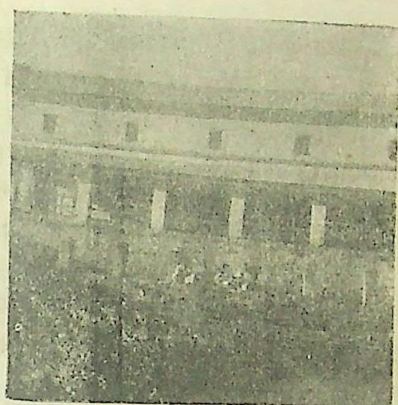
यहां पर भगवती आदकुमारी का सुन्दर मन्दिर बना हुआ है जिसके आगे एक खुला चौंतरा यात्रियों के विश्राम के लिये बना हुआ है । एक चाय की दूकान, एक फल वगैरा की दूकान तथा एक हलवा-पूड़ी की तथा एक भोजन की दूकान है -



(चित्र गर्भ गुफा आद कुमारी)

गर्भ गुफा

मन्दिर के पास ही एक "गर्भ-गुफा" नामक छोटा सा स्थान हैं जिसमें प्रत्येक यात्री बड़ी श्रद्धा से एक ओर से जाकर दूसरी ओर से निकलता है । गुफा बहुत तंग है तथा भगवती दुर्गा का नाम लेकर ही यात्री उसमें से श्रद्धाभाव से निकल जाते हैं । गुफा लगभग ५/६ गज लम्बी है; किन्तु टेढ़ी-मेढ़ी और तंग होने के कारण इसे गर्भ गुफा कहते हैं । यहां से माता वैष्णों अपना मार्ग बनाकर निकली थी ।



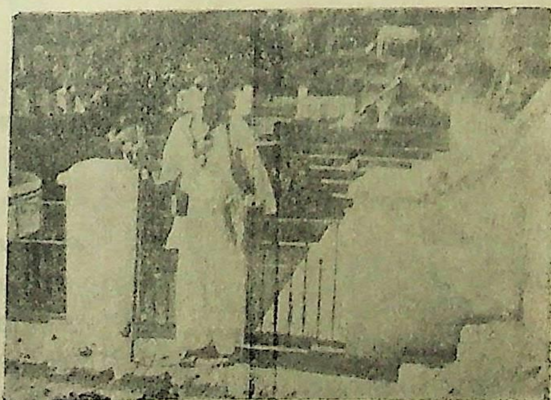
यहां पर धर्मार्थट्रस्ट की एक दो-मंजला सराय भी है जिसमें रात्री को विश्राम करने के लिये कम्बल आदि भी मिल जाते हैं। यात्री लोग वापसी पर या जाती बार यहां अवश्य रात्री को विश्राम करते हैं। वास्तव में यहां पर एक रात रह जाने से यात्रा की थकावट बिल्कुल मालूम नहीं होती है।

(चित्र सराये)

आदकुमारी स्थान वैसे भी चीड़ के ऊंचे ऊचे वृक्षों के मध्य स्थित होने के कारण स्वास्थ्य प्रद भी है। चारों ओर से सुन्दर शीतल वायु आने से रोगियों को लाभ पहुँचता है। नीचे देखने पर कटड़ा बहुत ही छोटा सा दिखाई देता है और दूर दूर तक यात्री लोग ऊंचे ऊंचे जय जय कारे बोलते नाचते कूदते आते जाते दिखाई देते हैं।

तालाब आदकुमारी

मन्दिर के पास एक सुन्दर तालाब भी है जिसमें पानी भरा रहता है और सीढ़ियां नीचे उतरने के लिये बनी हुई हैं। भगवती ने अपने भक्तों के लिये पहिले से ही तालाब का निर्माण करके पानी का प्रबन्ध कर दिया था ऐसा मालूम होता है।



(चित्र—लेखक यात्री के रूप में—तालाब आदकुमारी)

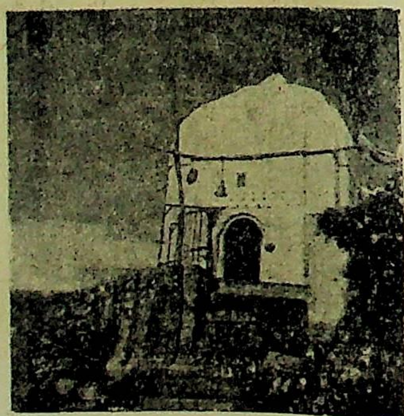
हाथी मत्था

यहां से माता वैष्णों की जय जयकार करते हुए यात्री लोग आगे बढ़ते चले जाते हैं और 'हाथी मत्था' नामक स्थान पर पहुँचते हैं। यह स्थान हाथी के मस्तक की तरह होने के कारण हाथी मत्था कहलाता है। इसकी चढ़ाई सीधी और

कठिन है। नयी सड़क वाले मार्ग के बन जाने से यात्री लोग यहां पर अब कम जाते हैं। हाथी मत्था पर खड़े होकर नीचे नजर दौड़ाने पर मीलों दूर का दृश्य नजर आता है। चन्द्रभागा (चिनाव) दूर तक फैली हुई सफेद चादर की तरह नजर आती है। एक ओर रियासी गांव तथा कुछ अन्य गांव भी नजर आते हैं। पीर-पंजाल की चोटी भी बर्फ से ढकी हुई नजर आ जाती है। शीतल वायु का झोंका आते ही ठण्डक भी लगने लगती है। यहां से थोड़ी दूर आगे चलने पर "सांजी छत" नामक स्थान आता है जो समुद्रतल से इस यात्रा के अन्य स्थलों से सबसे ऊंचाई पर स्थित है। यहां पर एक दुकान, चाय, मिठाई और फल आदि की है। यहां पर भी नीचे मीलों गहरी खाई और नागिन की तरह बल खाती चन्द्रभागा तथा अन्य दृश्य देखने को मिलते हैं।

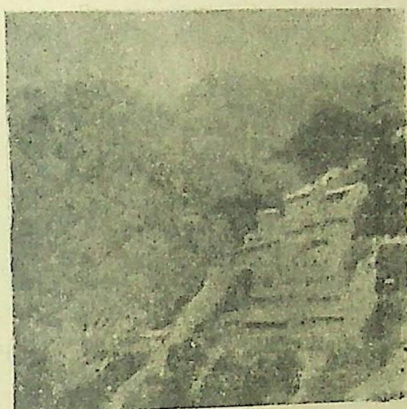
सांजी छत से आगे गोलाकार मार्ग शुरू हो जावेगा तथा यहां पर सिढ़ियों और सड़क वाला मार्ग एक हो जावेंगे। एक तरफ गहरी खाई है और एक तरफ गगनचूम्बी पर्वत। माता वैष्णों की जय जय कार करते हुए यात्री हाथों में लाल पीले झण्डे लिए आगे बढ़ते चले जाते हैं। इस मार्ग को "कमान गोशा" कहते हैं। रास्ते भर में छोटी एवं बड़ी कन्याएं अपने मधुर एवं सुरीले कण्ठों से माता की भेंट (भजन) सुनाकर यात्रियों को बरबस रोक लेती हैं।

भैरव मन्दिर



(चित्र भैरव मन्दिर)

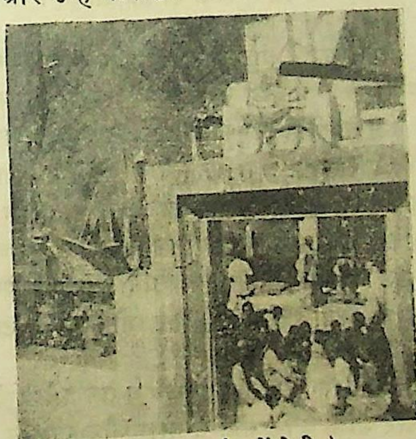
एक मील के लगभग आगे चलने पर उतराई शुरू हो जावेगी और वृक्ष एवं लताओं से घिरे मार्ग से निकल कर भैरव मन्दिर पर पहुँच जावेंगे। इस स्थान की महिमा का वर्णन इतिहास के प्रकरण में आ चुका है। अतः लौटती बार इस स्थान के दर्शन करने से यात्रा सफल होती है। जाती बार दर्शन नहीं किये जाते हैं। यहां पर एक चाय की दूकान तथा प्याऊ है। यहां से अब बिल्कुल उतराई लगभग दो मील की शुरू हो जावेगी और मार्ग में हरे भरे वृक्ष, रंग-बिरंगे फूल तथा भांति-भांति के पक्षियों की बोलियां यात्रियों का मन हर लेती है। इस स्थान को "माता का बाग" कहते हैं। भैरव मन्दिर से पुनः सीढ़ी और सड़क वाले दो मार्ग हो जाते हैं।



(चित्र दरवार का दूर से दृश्य)

भैरव मन्दिर से नीचे उतरते ही माता वैष्णों का दरबार नजर आने लग जाता है और यात्रियों की थकान एक दम गायब हो जाती है। सब लोग ऊंचे-ऊंचे स्वरों में भजन कीर्तन करते, नाचते-कूदते हुये आगे बढ़ते चले जाते हैं। मार्ग में भक्त लोग दर्शन करके वापिस आने वाले भी मिलते हैं। अत: दर्शन करके लौटने वाले एवं जाने वाले भक्त लोग परस्पर मिलकर खूब जय जयकार करते हैं। ज्यूं ज्यूं आगे बढ़ते जाते हैं दरबार नजदीक आता जाता है और अन्त में मां के पवित्र स्थान पर हजारों-सैंकड़ों मीलों से सपरिवार चले हुये यात्री पहुँच जाते हैं और उन्हें मानसिक शान्ति मिलती है।

वैष्णों दरबार

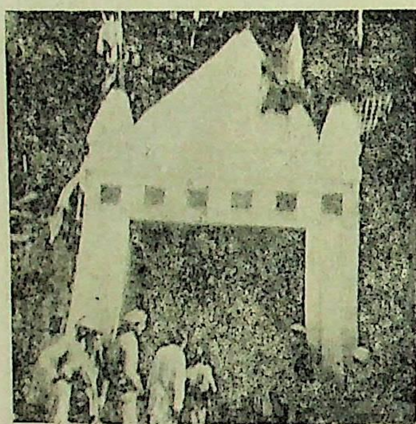


(चित्र दरबार वैष्णों देवी)

यहां पर धमार्थट्रस्ट की धर्मशाला तथा कुछ अन्य मां के सेवकों द्वारा निर्मित स्थान यात्रियों के विश्राम के लिए हैं। सबसे बड़ी एवं सुन्दर धर्मशाला दरबार में प्रवेश करते ही रावल पिण्डी सतसंग दिल्ली वालों की है जहां पर हजारों यात्री बेखटके विश्राम कर सकते हैं। कम्बल, दरी, लालटेन तथा बर्तन आदि भी इसी धर्मशाला के प्रबन्धक महोदय से रुपये अमानती रखने पर मिल जाते हैं। जम्मू काश्मीर राज्य की ओर से पुलिस तथा डाकखाना एवं अस्पताल आदि का पूरा-पूरा प्रबन्ध है। चाय, हलवा, पूड़ी तथा भोजन एव भेंटो (पूजन का सामान) आदि की यहां पर दुकानें हैं। शौच आदि के लिए अलग से प्रबन्ध है तथा स्थान स्थान पर पानी के नलके लगे हुए हैं।

पवित्र गुफा

दरबार में पहुँच कर थोड़े समय को विश्राम करने के बाद भगवती वैष्णों की पवित्र गुफा में से आ रहे पवित्र एवं निर्मल पानी से स्नान करना पड़ता है।



(चित्र पवित्र गुफा)

पहिले समय में जल की धारा बहुत बड़े रूप में एक ही स्थान पर गिरती थी किन्तु उसके स्थान पर ६ जलधारा बना दी गई हैं जिनमें ३ पुरुषों के लिये एवं ३ स्त्रियों के लिये हैं । जल बहुत ठण्डा होता है । अतः "जय माता की" कहकर यात्री शीघ्र ही स्नान करके शुद्ध कपड़े पहिन लेते हैं और अपनी अपनी भेंटा (नारियल वगैरा) हाथ में लेकर लाईन में खड़े हो जाते हैं । नवरात्र एवं दीवाली के उपरान्त विशेष भीड़ रहने से दर्शनों को कई कई दिन भी लग जाते हैं, किन्तु साधारणतया दर्शन जल्दी ही हो जाते हैं ।

गुफा के बाहर खुला चौंतरा है जहां पर यात्रियों की ५ या ६ लम्बी २ पंक्तियां दर्शनों की प्रतिक्षा में ऊंचे २ स्वरों में भजन और कीर्तन गाती मां के चरणों में बैठी रहती हैं । गुफा के एक ओर बरामदा है जिसमें धर्मार्थ ट्रस्ट के अधिकारी लोग या चढ़ापा जमा करने वाले खजांची तथा कथा करने वाले पंडित जी बैठे रहते है । गुफा के प्रवेश द्वार पर पुलिस के जवान हर समय प्रबन्ध के लिये खड़े रहते हैं । गुफा के अन्दर लगभग १० या १५ व्यक्ति एक बार में भेजे जाते हैं । गुफा के अन्दर अन्धेरा रहता है । धर्मार्थ ट्रस्ट ने अन्दर बिजली लगाकर प्रकाश का उत्तम प्रबन्ध किया है किन्तु फिर भी अपनी टार्च अवश्य साथ रखनी चाहिए ।

गुफा का प्रवेश द्वार बड़ा तग और छोटा है किन्तु माता वैष्णों की ऐसी अपार शक्ति है कि मोटे से मोटा और पतले से पतला व्यक्ति एक समान अन्दर चला जाता है । सर्व प्रथम दो या तीन गज तक लेट कर जाना पड़ता है । पुनः गुफा के अन्दर टेढ़े और तिरछे होकर चलना पड़ता है । माता के चरणों से निकली पवित्र पानी की धारा नीचे पांवों में बहती रहती है जिसका जल ठण्डा और मीठा होता है । यात्री लोग वापसी पर इस पवित्र जल को शीशीयों में भर कर अपने साथ ले जाते हैं ।

१० गज से ऊपर चलने के पश्चात् गुफा में बाईं ओर घूम कर सीढ़ियों पर चढ़कर एक छोटे से तंग मार्ग द्वारा निकल कर मां वैष्णों के चरणों पर पहुँचना पड़ता है । जब बिजली का प्रकाश नहीं रहता । उस समय यात्रियों को अपनी अपनी टार्च के प्रकाश से सुविधा रहती है नहीं तो घबराहट हो जाती है ।

तीन पिण्डयाँ



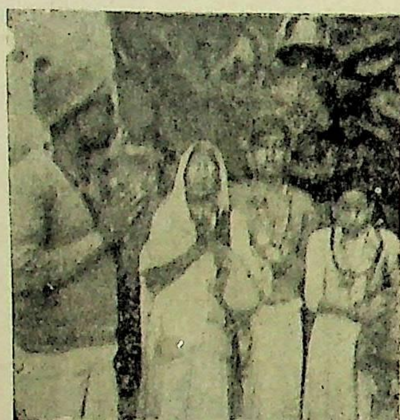
(चित्र तीन पिण्डयां)

गुफा के अन्दर भगवती श्री वैष्णों की महाकाली, महालक्ष्मी एवं महा सरस्वती की तीन पिण्डयां हैं। यह तीनों स्वरूप भगवती वैष्णों का ही प्रतीक है (देखिये इतिहास-प्रकरण) त्रेता युग से लेकर (रामावतार से) भगवती वैष्णवी इसी गुफा के अन्दर तप में लीन हैं और कलियुग के अन्त में जब भगवान कलकि अवतार धारण कर दुष्टों का संहार करेंगे तब भगवती वैष्णों उनकी शक्ति होगी और संसार में पुनः सुख शान्ति का प्रसार करेगी।

गुफा के अन्दर अन्य देवी देवताओं की मूर्तियां भी हैं किन्तु वह सब बाद में रक्खी गई है। सबसे प्राचीन और वास्तविक मूर्ति तो यह तीन पिण्डियां ही हैं। वहां के कुछ लोग यात्रियों को गुफा के एक ओर ले जाकर पांच पांडवों का स्थान, कपला गाय का स्थान तथा प्रह्लाद का स्तम्भ दिखाकर अपनी भेंट पूजा ले लेते हैं जो कि केवल काल्पनिक हैं और यात्रियों से धन लेने का साधन है।

तीन पिण्डियों के पास दो पुजारी बैठे रहते हैं जो कि यात्रियों से भेंट लेकर मां के अर्पण करते जाते हैं और यात्रियों को प्रसाद (खजाना) देकर एवं रोली का तिलक लगाकर उन्हें दर्शन करने के बाद वापिस भेजते रहते हैं ताकि पीछे वाले यात्रि आगे आते जावें। मां के दर्शनों से सब कामनाएं पूर्ण होती हैं और जीवन सफल होता है। मां सदैव अपने बच्चों पर दया करती है और उनकी रक्षा करती है।

यात्री लोग बड़े प्रसन्न चित्त होकर जय जयकार करते गुफा से बाहर आते हैं और दण्डवत प्रणाम करके अपने स्थान को चले जाते हैं। तीर्थ स्थान पर जाकर एक रात अवश्य रहना चाहिये। अतः यहां पर भी कम से कम एक रात अवश्य रहना चाहिए। दूसरे दिन पुनः दर्शन करने के बाद यात्री लोग वापसी की तैयारी



(चित्र यात्री गुफा से दर्शन करके बाहर आ रहे हैं)

करते है। दरबार में माता के बाग का हरा धूप अवश्य लाना चाहिये जो वहीं पर दूकान से मिल जावेगा। उसके जलाने से शीतला माता का प्रकोप शान्त हो जाता है।

कई लोग वहीं पर कन्याओं को हलवा पूड़ी लेकर जिमा देते हैं तथा कई भक्त लोग अपने अपने घरों में आकर यह शुभ कार्य करते हैं।

श्री वैष्णों गुफा के ठीक ऊपर सूर्य-कुण्ड नामक स्थान लगभग ४ मील की दूरी पर है। कहते हैं यहां पर प्रातःकाल सूर्य उदय होने का दृश्य देखने योग्य है।

वापसी

कटड़ा से एक मार्ग नीचे से ही माता के दरबार तक पहुँचता है और पहिले समय में घोड़े आदि इसी मार्ग से आते जाते थे और अब भी सामान इसी मार्ग से आता रहता है। कई लोग इस मार्ग से वापिस कटड़ा को प्रस्थान करते हैं जो कि १५ मील के लगभग होगा। इसमें चढ़ाई उतराई बिल्कुल नहीं है। अधिकतर लोग जिस मार्ग से आते है उसी से वापिस जाते हैं। वापसी पर यदि आदकुमारी में रात्री को विश्राम करके सवेरे ही यात्रा शुरू करदी जाये तो थकान बिल्कुल नहीं होगी और कटड़ा में लगभग प्रातः ८ बजे पहुँच सकते हैं। कई लोग सीधे ही सायंकाल या रात्री को कटड़ा पहुँच जाते हैं। कटड़ा में भूमका माता के तथा अन्य स्थानों के दर्शन करने के बाद अपना सामान ठीक करके, पण्डा लोगों को दक्षिणा देकर बस द्वारा जम्मू पहुँच जाते हैं। जम्मू में धर्मशाला में रहने का प्रबन्ध करके जम्मू के स्थानिक एवं निकटवर्ती तीर्थों एवं मन्दिरों के दर्शन करके अखरोट इत्यादि खरीद कर बस द्वारा पठानकोट पहुँच जाते हैं और पुनः अपने अपने स्थानों को प्रस्थान कर देते हैं।



श्री वराह पुराणोक्त दिव्य वैष्णवी स्तोत्र

नमो देवि महाभागे गम्भीरे भीम दर्शने ।
जयस्थे स्थिति सिद्धान्ते त्रिनेत्रे विश्वतो मुखि ।।

विद्येऽविद्ये जपे जापये महिषासुरमर्द्धिनि ।
सर्वगे सर्व देवेशि विश्वरुपिणि वैष्णवि ।।

बीतशोके ध्रुवे देवि पद्मपत्र शुभेक्षणे ।
शुद्ध सत्व व्रतस्थे च चण्डरूपे विभावरि ।।

ऋद्धि सिद्धि प्रदे देवि विद्येऽविद्येऽमृते शुभे ।
शाङ्करी वैष्णवी ब्राह्मी सर्वदेव नमस्कृते ।।

घण्टा हस्ते त्रिशूलास्त्री महमहिष मर्द्धिनि ।
उग्ररूपे विरूपाक्षि महामायेऽमृतस्रवे ।

सर्वसत्वहिते देवी सर्वसत्वमये ध्रुवे ।
विद्यापुराणशिल्पानां जननि भूतधारिणि ।।

सर्ववेदरहस्यानां सर्व सत्ववतां शुभे ।
त्वमेव शरणम् देवी विद्येऽविद्ये श्रियेऽम्बिके ।।

विरूपाक्षि तथाक्षान्ते क्षोभितान्तलेर्जऽमले ।
नमोऽस्तु ते महादेवि नमस्ते परमेश्वरी ।।

शरणं त्वां प्रपद्यन्ते ये देवि परमेश्वरी ।
न तेषां जायते किञ्चिद् अशुभं रणसङ्कटे ।।

यश्च व्याघ्र भयेघोरे चौरराज भये तथा ।
स्तवनेन सदा देवि पठिष्यति यतात्मवान् ।।

निगडस्थोऽपि यो देवि त्वां स्मरिष्यति मानवः ।
सोऽपि बन्धैविनिर्मुक्तः ससुखं वसते सुखि ।।

एवं स्तुता तदा देवी देवैः प्रणतिपूर्वकम् ।
उवाच देवान सुश्रोणी वृणुध्वं वरमुत्तमम् ।।

देवि ? स्तोत्रमिदं ये हि पठिष्यन्ति तवानघे ।
सर्वकाम समापन्नान् कुरू देवि ! सनो बरः ।।

इति श्री वराह पुराणोक्तं श्री वैष्णवी स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

—

महर्षि वेदव्यास कृत भगवती की स्तुति

जय भगवती देवी नमो वरदे ।
जय पापविनाशिनि बहु फल दे ॥
जय शुम्भ निशुम्भ कपाल धरे ।
प्रणमामि तु देवी नरार्ति हरे ॥
जय चन्द्र दिवाकर नेत्र धरे ।
जय पावक भूषित वक्त्र वरे ॥
जय भैरव देहनिलीनपरे ।
जय अन्धक दैत्य विशोककरे ।
जय महिषविमर्दिनि शूल करे ।
जय लोक समस्तक पाप हरे ॥
जय देवि पितामह विष्णुनते ।
जय भास्कर शक्र शिरोऽवनते ॥
जय षण्मुख सायुधईशनुते ।
जय सागरगामिनि शम्भुनुते ॥
जय दुःख दरिद्र विनाशकरे ।
जय पुत्र कलत्र विवृद्धिकरे ॥
जय देवि समस्त शरीरधरे ।
जय नाकविदर्शिनि दुःख हरे ॥
जय व्याधि विनाशिनि मोक्ष करे ।
जय वाञ्छित दायिनी सिद्धिवरे ॥

एदद्व्यासकृत स्तोत्रं यः पठेन्नियतः शुचिः ।
गृहे वा शुद्धभावेन प्रीता भगवती सदा ॥

———

जगद् गुरू शंकराचार्य कृत भगवती की स्तुती

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो;
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथा ।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं,
परं जाने मातस्त्वदनुसरण क्लेश हरणम् ।।१।।

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया,
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत ।
तदेतत्क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे,
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।।२।।

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः,
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः ।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे,
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।।३।।

जगन्मातर्मातिस्तव चरण सेवा न रचिता,
न वा दत्तम् देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरूपमं यत्प्रकुरूषे,
कुपुत्रो जायते क्वचिदपि कुमाता न भवति ।।४।।

परित्यक्ता देवा विविध विधि सेवाकुलतया;
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।
इन्दानी चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता;
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् ।।५।।

श्वपाको जल्पाको भवति मधु पाकोपमगिरा,
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः ।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं,
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ । ६।।

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो,
जटाधारी कण्ठे भुजगपति हारी पशुपतिः ।

कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं,
भवानि त्वत्पाणि ग्रहण परि पाटी फलमिदम् ।।७।।

न मोक्षस्याकांक्षा भवविभववाञ्छापि च न मे,
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुन: ।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै,
मृडानी रूद्राणी शिव शिव भवानीति जपत: ।।८।।

नाराधितासि विधिना विविधोपचारै:,
किं रूक्ष चिन्तनपरैन कृतं वचोभि: ।
श्यामे तव्मेव यदि किञ्चन मय्यनाथे,
धत्से कृपामुचिमम्ब परं तवैव ।।९।।

आपत्सु मग्न: स्मरणं त्वदीयं,
करोमि दुर्गें करूणार्णवेशि ।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथा:,
क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ।।१०।।

जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करूणास्तिचेन्मयि,
अपराधपरम्परावृतं नहि माता समुपेक्षते सुतम् ।।११।।

मत्सम: पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि ।
एवं ज्ञात्वा महादेवी यथा योग्यं तथा कुरू ।।१२।।

इति श्री मद् जगदगुरू शङ्कराचार्यं ।
कृत देव्यपराधक्षमापन स्तोत्रंसम्पूर्णम् ।।

——

श्रीदेव्यपराधक्षमापनस्तोत्र का

(पं० श्रीरमाशंकरजी मिश्र 'श्रीपति' कृत हिन्दी अनुवाद)

(१)

न मंत्रोंको जाना नहिं यतन आती स्तुति नहीं,
न आता है माता तव स्मरण आह्वान स्तुति ही,
न मुद्राएं आतीं जननि नहिं आता विलपना,
हमें आता तेरा अनुसरण ही क्लेशहर जो।

(२)

न आती पूजा की विधि न धन आलस्ययुत मैं,
रहा कर्तव्योंसे विमुख चरणोंमें रति नहीं,
क्षमा दो हे माता अयि सकल उद्धारिणि शिवा !
कुपुत्रोंको देखा कबहुँक कुमाता नहिं सुनी।

(३)

धरित्रीमें माता सरल शिशु तेरे बहुत हैं,
उन्हींमें तो मैं भी सरल शिशु तेरा जननि हूँ,
अतः हे कल्याणी समुचित नहीं मोहिं तजना,
कुपुत्रोंको देखा कबहुँक कुमाता नहिं सुनी।

(४)

जगन्माता अम्बे तव चरणसेवा नहिं रची,
तुम्हारी पूजामें नहिं प्रचुर द्रव्यादिक दिया,
अहो ! तो भी माता तुम अमित स्नेहार्द्र रहतीं,
कुपुत्रोंको देखा कबहुँक कुमाता नहिं सुनी।

(५)

सुरोंकी सेवायें विविध विधिकी, हैं सब तजी,
पचासीसे भी हे जननि वय बीती अधिक है,
नहीं होगी तेरी मुझपर कृपा तो अब भला।
निरालंबी लंबोदर-जननि जायें हम कहां ?

(६)

मनोहारी वाणी अधम जन चांडाल लहते,
दरिद्री होते हैं अभय बहु द्रव्यादिक भरे,
अपर्णे कर्णोंमें यह फल जनोंके प्रविशता,
अहो ! तो भी आती जपविधि किसे है जननि हे !

(७)

चिताभस्मालेपी गरल अशनी दिक्पट धरे,
जटाधारी कंठे भुजगपति माला पशुपति,
कपाली पाते हैं इह जग जगन्नाथपदवी,
शिवे ! तेरी पाणिग्रहण परिपाटी फल यही।

(८)

न है मोक्षाकांक्षा नहिं विभववाञ्छा हृदयमें,
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छा अब नहीं,
यही यांचा मेरी निज तनयको रक्षित करो,
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानी जपति जो।

(९)

नाना प्रकार उपचार किये नहीं है,
रूखा न चिंतन किया वचसा कभी भी,
श्यामे ! अनाथ मुझको लख जो कृपा हो,
तो है यही उचित अम्ब ! तुम्हें सदा हो।

(१०)

आपत्ति से व्यथित हो तुमको भजूं मैं,
करो कृपा हे करुणार्णवे ! शिवे !!
मेरे शठत्वपर आप न ध्यान देना,
क्षुधा तृषार्ता जननी पुकारते।

(११)

जगदम्ब विचित्र यह क्या, परिपूर्ण करुणा यदि करो,
अपराध करे तनय तो, जननी नहिं अनादर करे।

(१२)

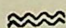
अघहारी तो सम नहीं, मो सम पापी नाहिं।
जननी यह जिय जानिकै, जो भावै करु सोय।।

गोस्वामी तुलसीदास जी कृत भगवती की स्तुती

जय जय गिरिबर राज किशोरी ।
जय महेश मुख चन्द चकोरी ।।
जय गज बदन षड़ानन माता ।
जगत जननि दामिनि दुति गाता ।
नहि तब आदि मध्य अवसाना ।
अमित प्रभाउ वेदु नहिं जाना ।।
भव भव विभव पराभव कारिनि ।
विस्व विमोहनि स्वबस बिहारिनी ।।

पति देवता सुतीय महुँ मातु प्रथम तव रेख ।
महिमा अमित न सकहिं कहि सहस सारदा सेष ।।

सेवत तोहि सुलभ फल चारी ।
बरदायनो पुरारि पिआरी ।।
देवि पूजि पद कमल तुम्हारे ।
सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे ।।
मोर मनोरथ जानहु नीके ।
बसहु सदा उर पुर सबही के ।।
कीन्हऊं प्रगट न कारण तेही ।
अस कहि चरन गहे वैदेही ।।



गुरु गोविन्द सिंह जी कृत भगवती की स्तुति

प्रथम काल सब जगको ताता,
ताते तेज भयो विख्याता ।
सोई भवानी नामु कहाई,
जिन यह सगली सृष्टि बनाई ॥

नमो उग्रदन्ती अनन्ती सवैया ।
नमो जोग जोगेश्वरी जोगमैया ॥
नमो केहरी–वाहनी शत्रु–हंती ।
नमो शारदा ब्रह्मविद्या पढ़न्ती ॥
नमो ऋद्धिदा, सिद्धदा, बुद्धि–दैनी ।
नमो कालके कालको काल–छैनी ॥
नमो ज्योति—ज्वाला तुम्हें वेद गावै ।
सुरासुर ऋषीश्वर नहीं भेद पावै ॥

भगवती की विविधकीर्तन धवनियां एवं स्तुतियां

शंखचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे ।
प्रसीद वैष्णवी रूपे नारयाणि नमोऽस्तुते ॥



जय जय दुर्गा जय मा तारा ।
जय गणेश जय शुभ आगारा ॥



दुर्गतिनाशिनि दुर्गा जय जय ।
काली काल विनाशिनि जय जय ॥
उमा रमा ब्रह्माणी जय जय ।
राधा सीता रुक्मिणि जय जय ॥



जयति शिवा — शिव शंकर हर जय ।
महादेव हे शम्भो जय जय ॥
जय गिरितनये, नीलकण्ठ जय ।
जगदम्बे जय आशुतोष जय ॥



ओ३म् शिव ओ३म् शिव जय शिव जय शिव ।
ओ३म् शिव ओ३म् शिव तव शरणम् ॥
नमामि शंकर भवानि शँकर ।
उमा महेश्वर तव शरणम् ॥



सर्व मङ्गल मङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥



शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे ।
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥



ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती ही सा ।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥



जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ॥

आरती श्री जगदम्बा जी की

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी ।
मैया जय मङ्गल करणी मैंया जय आनन्द करणी ।।

तुमको निशि-दिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी ।। जय अम्बे ।।
मांग सिन्दूर विराजत टीको मृग—मद को ।। मैया टीको ।।
उज्जवल से दोऊ नैना, चन्द्र बदन नीको ।। जय अम्बे ।।
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजे ।। मैया रक्ता ।।
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे ।। जय अम्बे ।।
केहरि वाहन राजत, खड़ग खप्पर धारी ।। मैया खड़ग ।।
सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुःख हारी ।। जय अम्बे ।।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोति ।। मैया नासा ।।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योति ।। जय अम्बे ।।
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती ।। मैया महिष ।।
धूम्र विलोचन नैना, निशि—दिन मदमाती ।। जय अम्बे ।।
चण्ड मुण्ड संहारे शोणित बीज हरे ।। मैया शोणित ।।
मधु कैटभ दोऊ मारे सुर भयहीन करे ।। जय अम्बे ।।
ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमला रानी ।। मैया तुम ।।
आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी ।। जय अम्बे ।।
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरो ।। मैया नृत्य ।।
बाजत ताल मृदंगा और बाजे डमरू ।। जय अम्बे ।।
तुम ही जग की माता तुम ही हो भरता ।। मैया तुम ।।
भक्तन की दुःख हरता सुख सम्पत्ति करता ।। जय अम्बे ।।
भुजा चार अति शोभित वर अभय धारी ।। मैया वर ।।
मन वांछित फल पावत, सेवत नर नारी ।। जय अम्बे ।।
कांचन थाल विराजत अगर कपूर बाती ।। मैया अगर ।।
श्री मालकेतू में राजत कोटिरत्न ज्योति ।। जय अम्बे ।।
ये अम्बे जी की आरती जो ! कोई नर गावे ।। मैया जी ।।
कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पति पावे ।। जय अम्बे ।।

—

बृज प्रिंटिंग प्रेस, सहारनपुर

अथ

जन्मपत्रिका



नाम ....

पता:

विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय पञ्चतीर्थी (जम्मू)

नन्दल[illegible] [illegible] पुस्तक विक्रेता जम्मू।